RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivahan Vishesh

वर्ष 03, अंक 364, नई दिल्ली, बुधवार 04 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आप सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

03 होली सिर्फ एक त्योहार नहीं, एक एहसास है

06 होली, बदलता समाज और मर्यादा की नई परिभाषाएँ

08 झारखंड में घर बुलाये तांत्रिक ने नाबालिग के साथ किया बलात्कार

रंगों के महापर्व
होली की हार्दिक शुभकामनाएं।
अमर पाल सिंह
अपर आयुक्त भारत सरकार

SHIGAN
Happy Holi
May the colors of Holi add miracles and colorful splendor to your life

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
परिवहन विशेष parivahanvishesh
दैनिक समाचार पत्र की ओर से
प्रेम भाईचारे के प्रतीक रंगों के पावन पर्व
॥ होली ॥
हिंदी और इंग्लिश भाषा में
की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं!
संजय बाटला पब्लिशर /मुख्य संपादक

SERVE UTTAM VENTURES PVT LTD
Happy Holi
May your life be as colourful as Holi's gulal
Virender Dahiya
9811129442
GOVT. AUTHORISED REGD. VEHICLE SCRAPPING FACILITY
Adid.: Village Lohat, Khasra No. 25/14/2/2, 15/2, Badli, Jhajjar, Haryana-1241005 (India)
Contact No. +91- 9990630006
website : www.serveuttamventures.com
Email. serveuttamventures01@gmail.com

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.) TOLWA
की ओर से सभी देशवासियों को
रंगोत्सव
की हार्दिक शुभकामनाएं
संजय बाटला
चेयरमैन / राष्ट्रीय अध्यक्ष
पिंकी कुंडू
राष्ट्रीय महासचिव

(दिल्ली राज्य)
सर्व धर्म मित्र मंडल (रजि.)
आप सभी को
होली
की हार्दिक शुभकामनाएं...
कार्यालय : सी 15 ए, डीडीए फ्लैट्स, शिवाजी एन्क्लेव, रघुवीर नगर, नई दिल्ली 110027
मोबाइल : 9910234578, 9312170612

Happy Holi
Let's make this Holi a greener celebration!
Gurvinder Singh
Director
+91 82875 40897
+91 98915 28018
www.elvgenius.com
scrapvehicleindia8@gmail.com
B.O Hari Nagar, New Delhi
H.O Bahadurgarh, Haryana
ELV GENIUS
SCRAP VEHICLE ELV INDIA PVT LTD
Govt Approved RVSF (Registered Vehicle Scrapping Facility) Center
Empowering Recycling, Shaping a Sustainable Tomorrow!

Happy Holi
आपको ओर आपके परिवार को होली को हार्दिक शुभकामनार!
राजकुमार यादव
प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजी.)
की ओर से भारत देश के सभी वासियों और देश में परिवहन क्षेत्र से जुड़े साथियों को
स्नेह, सौहार्द एवं समरसता के पावन पर्व
होली
की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ
TOLWA
संजय बाटला
चेयरमेन / राष्ट्रीय अध्यक्ष

सभी प्रदेशवासियों को
होली
की हार्दिक शुभकामनाएँ
डॉ गीता रानी
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (मातृ शक्ति प्रकोष्ठ)
विश्व हिंदू महासंघ।

ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड
की ओर से भारत देश के सभी वासियों और देश में परिवहन क्षेत्र से जुड़े साथियों को
होली
की शुभकामनाएँ
संजय कुमार बाटला प्रिंस बाटला अंश बाटला

Ajuman Holidays
Ride Safe, ride smart, ride with Ajuman
HAPPY HOLI
Gurugram, Delhi, Mathura, Agra, Lucknow, Basti, Gorakhpur, Azamgrhh
Contact : 9711329572, 9711329552
www.ajumanholidays.com

GSS
GANPATI SCRAPPING SOLUTIONS
Piyush Bhatt
8595257770
Happy HOLI
Wishing that this Holi life erupts in a celebration of colors and joy as we reach out to wish you and your family a very Happy Holi
piyush.bhtt1234@gmail.com
MUSTIL/KILA No: - 47//24/1/2(0-10), 54//5/2/(7-14), 6(8-0), 7/1/1(5-2), 15/1(3-11), Village Khatawali, Dharuhera – 12340

बदलते दौर में होली: परंपरा से आधुनिकता तक का सफर

-सुनील कुमार महला

हर वर्ष फाल्गुन मास की पूर्णिमा को होलिका दहन का पर्व मनाया जाता है और उसके अगले दिन चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को रंगों की होली खेली जाती है। किंतु इस वर्ष पूर्णिमा तिथि पर वर्ष का पहला चंद्र ग्रहण पड़ने के कारण होलिका दहन और रंगोत्सव की तिथि को लेकर असमंजस की स्थिति बनी हुई है।

ज्योतिषियों के अनुसार इस वर्ष 3 मार्च 2026 को वर्ष का पहला चंद्र ग्रहण पड़ रहा है और यह भारत में भी दृश्यमान होगा। द्रिक पंचांग के अनुसार ग्रहण दोपहर 3 बजकर 20 मिनट से प्रारंभ होकर सायं 6 बजकर 46 मिनट तक रहेगा। चूंकि यह ग्रहण भारत में दिखाई देगा, इसलिए इसका सूतक काल 9 घंटे पूर्व, अर्थात सुबह 6 बजकर 20 मिनट से प्रारंभ हो जाएगा। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सूतक काल में शुभ कार्य, उत्सव, पूजन, भोजन बनाना और ग्रहण करना वर्जित माना जाता है। इस दौरान मंदिरों के कपाट भी बंद कर दिए जाते हैं। ऐसे में रंगों की होली खेलना अशुभ और नकारात्मक प्रभाव देने वाला माना गया है।

शास्त्रों के अनुसार होलिका दहन के अगले दिन ही रंगों की होली खेली जाती है, किंतु इस बार ग्रहण के कारण विशेष सावधानी अपेक्षित है। होलिका दहन 2 मार्च 2026, सोमवार की रात्रि में भद्रा के पुच्छ काल में किया जा सकता है। भद्रा का पुच्छ 2 मार्च को रात्रि 11 बजकर 53 मिनट से 3 मार्च की रात्रि 1 बजकर 26 मिनट तक रहेगा। इसके अतिरिक्त 3 मार्च को प्रातः 5:30 बजे से 6:45 बजे के बीच भी होलिका दहन करना लाभकारी माना गया है, क्योंकि इसके बाद सूतक काल प्रारंभ हो जाएगा। चूंकि 3 मार्च को सूतक और ग्रहण का प्रभाव रहेगा, इसलिए उस दिन रंगों की होली खेलना उचित नहीं है। इस दृष्टि से 4 मार्च 2026 को रंगों की होली मनाना अधिक शुभ और लाभकारी रहेगा। ग्रहण समाप्ति के बाद स्नानादि कर शुद्ध होकर ही किसी भी प्रकार का उत्सव करना चाहिए।

होली का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्वः-

होली भारत का एक प्राचीन और लोकजीवन से गहराई से जुड़ा उत्सव है। इसकी जड़ें भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं में गहराई तक समाई हुई हैं। फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन और अगले दिन रंगोत्सव मनाने की परंपरा सदियों पुरानी है। प्राचीन काल में होली केवल एक दिन का त्योहार नहीं होती थी, बल्कि पूरे फाल्गुन मास में फाग और उल्लास का वातावरण बना रहता था। गांवों में चंग और ढोल की थाप पर फाग गीत गूंजते थे, स्वांग और लोकनाट्य प्रस्तुतियां होती थीं तथा समाज के सभी वर्ग मिलकर उत्सव मनाते थे। पूर्वकाल में होली अत्यंत सामुदायिक और सौहार्दपूर्ण होती थी। लोग घर-घर जाकर फाग गाते थे। महिलाएं

गाय के गोबर से उपले बनाती थीं, जिन्हें होलिका दहन की अग्नि में अर्पित किया जाता था। यह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रकृति और कृषि संस्कृति से जुड़ी आस्था का प्रतीक था। होलिका पूजन विधि-विधान से किया जाता था, जिसमें परिवार की सुख-समृद्धि और उत्तम फसल की कामना की जाती थी। अग्नि में हरे चने और गेहूं की बालियां सेंकी जाती थीं। इन भुने चनों को 'होला' कहा जाता है, जिन्हें प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता था। यह परंपरा रबी की फसल के पकने और कृषि समृद्धि से जुड़ी थी।

रंगों का आध्यात्मिक और दार्शनिक अर्थः-

होलिका दहन के अगले दिन प्राकृतिक रंगों, गुलाल और अबीर से होली खेली जाती थी। लोग गले मिलकर पुराने मतभेद भुला देते थे। होली का मूल संदेश है-मन के विकारों को जलाकर प्रेम, क्षमा और भाईचारे के रंग में रंग जाना।रंगों में तीन प्रमुख रंग माने गए हैं-लाल, हरा और नीला। शेष रंग इन्हीं से निर्मित होते हैं। लाल रंग उत्साह, साहस, सौभाग्य, उमंग और नवजीवन का प्रतीक है। यह मानवीय चेतना में तीव्र ऊर्जा और कंपन उत्पन्न करता है। होली का जोश और उल्लास लाल रंग में ही परिलक्षित होता है।हरा रंग विश्वास, उर्वरता, समृद्धि और प्रगति का प्रतीक है। यह विचारों की हरियाली और जीवन की खुशहाली का संदेश देता है। नीला रंग शांति, स्थिरता और व्यापकता का प्रतीक है। आकाश और समुद्र की विशालता की भांति यह समावेशी भावना का द्योतक है। वास्तु शास्त्र में इसे मानसिक शांति से जोड़ा गया है तथा योग दर्शन में इसे विशुद्ध चक्र (कंठ चक्र) के संतुलन से संबंधित माना जाता है।

साहित्य में होलीः-

महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने भी होली के उल्लास और प्रकृति के रंगों का सुंदर चित्रण किया है। उनकी कविता में 'लाल गुलाल' और प्रकृति के राग-पराग का जो वर्णन मिलता है, वह होली के सांस्कृतिक सौंदर्य को सजीव कर देता है।

पारंपरिक होली बनाम आधुनिक होलीः-

पूर्वकाल में होली प्राकृतिक रंगों से खेली जाती थी-हल्दी से पीला, चुकंदर से लाल, फूलों से गुलाबी और नीम की पत्तियों से हरा रंग बनाया जाता था। ये रंग त्वचा के लिए सुरक्षित और स्वास्थ्यवर्धक होते थे। पलाश के फूलों से बना रंग विशेष लोकप्रिय था। आज रासायनिक रंगों का प्रचलन बढ़ गया है, जिनमें कई बार सल्फर और भारी धातुओं का उपयोग होता है। इनके कारण त्वचा में जलन, एलर्जी, आंखों में संक्रमण तथा पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। पहले होली गीतों में अश्लीलता नहीं होती थी; फाग, ढोल-नगाड़े, चंग-डफ और बांसुरी के साथ सामूहिक उत्सव मनाया जाता था। नशे का प्रचलन सीमित था। समय के साथ डीजे संस्कृति, तेज ध्वनि और डिजिटल माध्यमों ने स्थान ले लिया है। आत्मीयता, बड़ों का आशीर्वाद लेने की परंपरा तथा सामुदायिकता में कमी देखी जा रही है।

होली का वास्तविक संदेशः-

होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि यह सामाजिक एकता, प्रेम, क्षमा और बंधुत्व का प्रतीक है। यह शीत ऋतु की विदाई और ग्रीष्म ऋतु के आगमन का सांकेतिक पर्व भी है। फाल्गुन मास में जब पलाश के फूल खिलते हैं और आम्र-मंजरियां महकती हैं, तब प्रकृति स्वयं रंगों में रच-बस जाती है। होली हमें सिखाती है कि बाहरी रंगों के साथ-साथ मन को भी रंगना आवश्यक है। यह पर्व नकारात्मकता, द्वेष और कटुता को त्यागकर नवजीवन का संदेश देता है। यदि हम मर्यादा, प्राकृतिक रंगों और पारंपरिक मूल्यों के साथ होली मनाएं, तो यह पर्व आज भी उतनी ही आत्मीयता और उल्लास से मनाया जा सकता है, जितना पूर्वकाल में मनाया जाता था। अंततः होली का सार यही है-'रंगों में घुली मिठास हो,हर चेहरे पर उल्लास हो,

दिल से दिल की पहचान हो, और जीवन प्रेम व सद्भाव से परिपूर्ण हो। आप सभी को होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार

---होलिकोत्सव पर विशेष---

बुरा ना मानो होली है : जिसकी किस्मत असर दिखाये , उल्लू से नेता बन जाये

: नरेन्द्र मोदी : सारा जोर लगाओगे,
मेरी ना ले पाओगे।
: मोहन भागवत : ईश्वर मन की पूर्ण कराए,
जल्द राष्ट्र हिंदू बन जाये।
: अमित शाह : अंतिम इच्छा पूर्ण करादे ,
एक बार उनकी दिलवादे।
: राजनाथ सिहः अब ज्यादा ना पाएंगे,
यूंही काम चलाएंगे।
: नितिन गडकरी : हर जुगाड़ अपनाना है,
क्योंकि उनकी पाना है।
: जेपी नड्डा : मेरा भी है तगड़ा जाल,
मैं भी चलता अपनी चाल।
: एल के आडवानी :समय ने डाली ऐसी धूल,
अपने भी गये मुझको भूल।
: मुरली मनोहर : सबकुछ जग में समय कराये,
तभी तो मुझको भी ठुकराये।
: मल्लिकार्जुन खड़गे : अब ना कुछ कर पाऊंगा,
केवल नाम चलाऊंगा।
: सोनिया गांधीः हे ईश्वर !कुछ भी करवाओ ,
मेरे पप्पू को दिलवाओ।
: राहुल गांधी : कौन तरीका अब अपनाए,
जीते जी उनकी मिल जाए।
: प्रियंका गांधी : इतना करने पर भी हारे ,
लगता दिन लद गए हमारे।
: योगी आदित्य नाथ : हमको वह भी पाना है,
हिंदू राष्ट्र बनाना है।
: सतीश महाना : जो चाही वह मिल ना पाई,
सत्य कहूं मैं कुर्सी भाई।
: अखिलेश यादव : यह भी सत्य बताना है,
नहीं कभी अब पाना है।
: शिवपाल यादव : दिल ने मेरे माना है,
अब नंबर ना आना है।
: मायावतीः समय नहीं अब आयेगा,
फिर भी हाथी खायेगा।
: लालू यादव : अब अब क्या हम कर पाएंगे,
बस जोकर कहलाएंगे।
: तेजस्वी यादव : सपना रहना सदा अधूरा,
जनता ने मारा है पूरा।
: नितीश कुमार: मेरा जैसा कौन है यार,
फिर से दिया उसी को मार।
:रेखा गुप्ताः दाढ़ी की सब माया है,
उनके बल पर पाया है।
: अरविंद केजरीवालः फेल हो गया उनका खेल,
क्या फिर भिजवाएंगे जेल।
: मनीष सिसौदिया : छूट गया अब खेल दिखाना।
पहली वाली अब कब पाना ॥
: संजय सिंह : बिल्कुल सत्य बताता हूं,
ना उनसे घबड़ाता हूं।
: ममता बनर्जी : मुझको अगर हटाना है,
तो कुछ खास कराना है।
: डॉ मोहन यादव : भाग्य चलाए मेरी रेल,
बहुत कमाऊ मेरा खेल।
: नायब सिंह सैनी : अपनी मैं भी चला रहा हूं,
वह भी काफी बना रहा हूं।
: भगवंत मानः अपना काम बनाना है,
पहले पैग लगाना है।
: हेमंत सोरेन : कौन करे ना लंबा खेल,
मैं भी रहा आज भी पेल।
: चंपई सोरेन : ना भिजवाता उनको जेल,
कभी ना बनता मेरा खेल।
: पुष्कर सिंह धामी : मुझक कोई समझ ना पाए,
तरह - तरह से खाना आए।
: एम के स्टालिन : शातिर बहुत हमारी चाल,
मैं भी बहुत कमाता माल ॥
: हिमंत विस्वा सरमा : हर कोई समझ सत्य यह जाए,
अपना काम बनाना आए।
:मोहन माझीः पहले से ज्यादा है पाया,
पहले नंबर पर है माया।
: सुखबिन्दर सिंह सुक्खू : मेरा भी तो समझो हाल,
काम बाद में पहले माल।
:देवेन्द्र फडनवीसः जब तक हम रह पाएंगे,
तब तक और कमाएंगे।
: एक नाथ शिंदे : क्या वे मुझे बताएंगे,
नहीं कभी क्या पाएंगे।
: उद्धव ठाकरे : मेरी भी है तगड़ी धाक,
मैं भी सत्ता का चालाक।
: राज ठाकरे : कोई तो अब राह बताए,
राज सुंदरी कैसे आए।
: शरद पवार : कभी नहीं अब पाना है,
बस खाली ही जाना है।
: संजय राउत : अपना काम बनाएंगे,
सब में टांग अड़ाएंगे।
: भजन लाल शर्मा : भाई यह भी ना कमजोर,
सारा है जुगाड़ पर जोर।
:भूपेन्द्र पटेलः अपना काम बनाता हूं,
अब भी बहुत कमाता हूं।
:उमर अब्दुल्लाः बस बेवकूफ बनाता हूं,
केवल खाये जाता हूं।
: गौतम अडानी : ईश कसम, हम सत्य बताते,
सच में हम सरकार चलाते।
: मुकेश अंबानी : पग - पग पर पैसे का फेरा,
जानो कहते किसे लुटेरा।
: अनिल अंबानीः उनकी तरह नहीं कर पाऊं,
मैं भी ज्यादा बहुत कमाउं।
: बाबा रामदेव : खेल रहा हूं जमकर पारी,
मैं भी बहुत बड़ा व्यापारी।

-सुनील बाजपेई
कवि, गीतकार, लेखक एवं वरिष्ठ पत्रकार

होली: भारतीय सभ्यता की आत्मा और आधुनिक जीवन में प्रासंगिकता

हरिश्चंद्र श्रीवास्तव | वरिष्ठ प्रवक्ता, भारतीय जनता पार्टी, उत्तर प्रदेश

मैं जब भी होली की बात करता हूँ, मन में पहले अपने ब्रज की याद आती है। मथुरा के उस बाज़ार की, जहाँ फाल्गुन आते-आते गुलाल की दुकानें सज जाती हैं और हवा में टेसू के फूलों की हल्की-सी महक घुल जाती है। शायद यही कारण है कि मैं होली को महज एक त्योहार नहीं मानता।

भारत एक भौगोलिक सीमा में बँधा राष्ट्र तो है ही, लेकिन उससे भी पहले यह एक जीवंत सभ्यता है। दुनिया की सबसे पुरानी, सबसे निरंतर बहने वाली सभ्यताओं में से एक। और इस सभ्यता को एक सूत्र में पिरोने का काम हमारे पर्वों ने किया है। ये उत्सव केवल खुशी मनाने के बहाने नहीं हैं।इनमें दर्शन है, पारिस्थितिकी है, सामाजिक न्याय है और एक गहरी आध्यात्मिक समझ भी है।

होली इन सबमें सबसे अलग है। सबसे खुली। सबसे निडर। यह किसी एक जाति की नहीं, किसी एक क्षेत्र की नहीं। अपने असली रूप में यह पूरी मानवता के भीतर जो आनंद छुपा है, उसका उत्सव है।

प्राचीन जड़ें: जब इतिहास और आस्था एक हो जाते हैं

होली कब शुरू हुई? यह प्रश्न उतना ही कठिन है जितना यह पूछना कि गंगा कब से बहती है। भविष्य पुराण और नारद पुराण में इस पर्व के स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं। यानी जब यूरोप में सभ्यता अंकुरित भी नहीं हुई थी, तब भी इस भूमि पर होली के रंग उड़ते थे।

सबसे प्रसिद्ध कथा तो हम सब जानते हैं।प्रह्लाद और होलिका की। लेकिन मैं कहूँगा कि इसे केवल एक धार्मिक कहानी मत समझिए।यह एक राजनीतिक और नैतिक वक्तव्य है।हिरण्यकश्यप के पास सत्ता थी, सेना थी, वरदान था। और प्रह्लाद के पास क्या था? बस एक अटूट विश्वास। और उसी विश्वास ने जीत हासिल की।

होलिका को अग्नि से अभय का वरदान था, फिर भी वह जल गई। प्रह्लाद के पास कोई वरदान नहीं था, फिर भी वह बचा। यही होली का मूल संदेश है: सत्य और भक्ति, अंततः किसी भी बाहरी शक्ति से बड़े होते हैं।

और ब्रज की होली? वह तो बिल्कुल अलग ही दुनिया है। बरसाना की लट्ठमार होली, वृंदावन की फूलों वाली होली। जो एक बार देख ले, भूल नहीं सकता। यहाँ होली केवल उत्सव नहीं रही, यह राधा और कृष्ण के बीच उस दिव्य प्रेम की पुनर्रचना है जिसे हर पीढ़ी अपने रंगों में जीती है।

होली और प्रकृतिः जब विज्ञान और परंपरा एक साथ चलते हैं

आधुनिक पीढ़ी के कुछ लोग कहते हैं कि हमारे त्योहार पुराने हो गए, अब इनकी ज़रूरत नहीं। मैं ऐसे लोगों से विनम्रतापूर्वक असहमत हूँ।

होली फाल्गुन और चैत्र के संधिकाल पर आती है। ठंड जा रही होती है, गर्मी दस्तक दे रही होती है। खेतों में फसल पक चुकी होती है। प्रकृति खुद रंगों में नहाई होती है। क्या यह संयोग है? बिल्कुल नहीं। हमारे पूर्वजों ने इस ऋतु-परिवर्तन के ठीक समय पर यह पर्व रखा, बहुत सोच-समझकर।

होलिका दहन की परंपरा लीजिए। पूर्णिमा की रात जलने वाली यह अग्नि हवा को शुद्ध करती है। शीत और बसंत के बीच के इस संक्रमण काल में जो रोगाणु पनपते हैं, यह धुआँ उन्हें नष्ट करता है। यह बात आधुनिक विज्ञान भी अब मान रहा है। और इसी अग्नि में नई फसल के दाने भूनने की परंपरा, वह धरती माँ के प्रति कृतज्ञता का सबसे सादा और सबसे सच्चा तरीका है।

टेसू, हल्दी, नीम, चंदनः इन प्राकृतिक रंगों में केवल सौंदर्य नहीं था, औषधि भी थी। गर्मी शुरू होने से पहले त्वचा को इन रंगों से मज़बूत करना, यह हमारे पूर्वजों की स्वास्थ्य-प्रज्ञा थी। उत्सव के भीतर छुपा विज्ञान। आज हम इसे 'holistic wellness' कहते हैं, हमारे पुरखे इसे बस होली कहते थे।

होलीः जहाँ ऊँच-नीच की दीवारें रंगों में डूब जाती हैं

भारत की सबसे बड़ी चुनौती क्या रही है सदियों से? सामाजिक विभाजन। जाति, वर्ग, आयु, प्रतिष्ठा के वे बंधन जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करते रहे।

होली साल में एक दिन इन सभी बंधनों को तोड़ देती है। जमींदार और मजदूर एक ही रंग में भीगते हैं। बेटा बाप के पैर छूता है और फिर उन्हें गुलाल से पोत देता है। कोई बुरा नहीं मानता। कोई छोटा नहीं महसूस करता। यह जादू कैसे होता है? मैंने बहुत सोचा इस पर।

इसका जवाब ब्रज की होली में मिलता है। श्यामवर्ण कृष्ण और गौरवर्णा राधा। जब कृष्ण राधा के गाल पर रंग लगाते हैं, तो वे वर्ण-भेद को, रंग-भेद को एक हँसी में उड़ा देते हैं। यह कोई आधुनिक प्रगतिशील विचार नहीं है, यह हमारी परंपरा में हज़ारों साल से मौजूद है।

वाराणसी की तंग गलियाँ हों, मथुरा के खुले आँगन हों, अवध के गाँव हों या बुंदेलखंड के मेले, होली हर जगह वही काम करती है। भेद को रंगों में बहा देती है। यह समावेशी भारत का मूल विचार है, किसी से उधार नहीं लिया, हमारी अपनी ज़मीन से उगा हुआ।

रंग बाहर के नहीं, भीतर के भी

एक बात जो अक्सर हम भूल जाते हैं वह यह कि होली केवल बाहरी उत्सव नहीं है। इसका एक भीतरी

आयाम भी है, और वह शायद ज़्यादा ज़रूरी है।

गुलाल का लाल रंग, जीवन और प्रेम का संकेत है। हल्दी का पीला, ज्ञान और शुभता का। प्रकृति का हरा, नवीनता और विकास का। जब हम एक-दूसरे पर ये रंग लगाते हैं तो अनजाने ही हम एक-दूसरे में उस परम चेतना को स्वीकार कर रहे होते हैं जिसे वेदांत 'अहम् ब्रह्मास्मि' कहता है। हर चेहरे में वही दिव्य प्रकाश।

और होलिका दहन? वह भी केवल एक प्रतीक नहीं है। हमें उस अग्नि में अपना अहंकार डालना है, अपनी ईर्ष्या, अपना क्रोध, अपनी घृणा। यह वार्षिक आत्मशुद्धि का अवसर है। मन की होली, आत्मा की होली।

आज की होलीः क्या हम इसके योग्य हैं?

यह प्रश्न मुझे खुद से भी पूछना होगा। क्या हम होली को उसकी गरिमा के साथ मना रहे हैं?

रासायनिक रंग जो बाज़ार में बिकते हैं, वे त्वचा को नुकसान पहुँचाते हैं।आँखों को औरपर्यावरण को भी। यह उस होली का अपमान है जो टेसू और हल्दी से खेली जाती थी, जो देह को नुकसान नहीं, शक्ति देती थी। सुखद बात यह है कि देश भर में प्राकृतिक रंगों की ओर लौटने का एक जागरूक आंदोलन बढ़ रहा है। यह छोटी-सी वापसी है, पर बहुत ज़रूरी है।

पानी का सवाल भी है। जब देश के कई हिस्सों में पानी की किल्लत होतो हज़ारों लीटर पानी बर्बाद करना क्या उचित है? अनेक समुदायों ने सूखी होली की परंपरा अपनाई है। मुझे लगता है यह कोई समझौता नहीं, यह होली की असली भावना के और करीब जाना है।

होली अब दुनिया की है

एक बात मुझे गर्व से भरती है। होली आज चालीस से अधिक देशों में मनाई जाती है। लंदन में, न्यूयॉर्क में, सिडनी में, टोक्यो में। वहाँ के लोग जो हमारी भाषा नहीं जानते, हमारे शास्त्र नहीं पढ़े, वे भी इस रंगोत्सव में शामिल होना चाहते हैं।

क्यों? क्योंकि इस पर्व में कुछ ऐसा है जो भाषा और सीमा से परे है। जो किसी को भी छू लेता है। यह उस सभ्यता की ताकत है जो जीवन को उत्सव की तरह जीना जानती है।

उत्तर प्रदेश इस विरासत का हृदय है। राम और कृष्ण की यह भूमि, तुलसीदास और सूरदास की यह वाणी-भूमि, कबीर और मीराबाई का यह रंग-मंच। कबीर ने ज्ञान की होली खेली जिसमें विवेक के रंग आत्मा को रँगते हैं। मीरा ने होली को दिव्य प्रेम का उन्माद माना। यह विरासत अतीत नहीं है, यह एक जीती-जागती शक्ति है जो आज भी हमें दिशा देती है।

जब तक रंग हैं, होली है

होली शाश्वत क्यों है? क्योंकि इसका सवाल शाश्वत है। जब तक दुनिया में अंधेरा है, प्रकाश की ज़रूरत रहेगी। जब तक दीवारें हैं, रंगों की ज़रूरत रहेगी। जब तक दिल में ठंडक है, बसंत की घोषणा की ज़रूरत रहेगी।

भारत ने दुनिया को एक विचार दिया है: जीवन उत्सव है। होली उस विचार की सबसे रंगीन, सबसे खुली, सबसे निर्भीक अभिव्यक्ति है।

इस होली पर, जब होलिका दहन होतो एक पल रुकिए। अपने भीतर झाँकिए। जो जलाना हो, जला दीजिए। और जब रंग खेलें, तो हर चेहरे में वह दिव्य प्रकाश देखिए जिसे कोई रंग ढक नहीं सकता और कोई अंधकार बुझा नहीं सकता।

होली की हार्दिक शुभकामनाएँ। जय हिंद।

होली

गली-गली में झूमें देखों, हुरियारों की टोली।
फागुन में सब रंग लगाते, खेल रहे हैं होली।।

रंग-बिरंगी होली आई, सबके मन को भाई।
नाच रहे हैं बच्चे देखो, खुशियाँ घर-घर छाई।।
होली की फुहार में देखो, नाच रही है टोली।
फागुन में सब रंग लगाते, खेल रहे हैं होली।।

होली पावन पर्व हमारा, मिल कर सभी मनाते।
गांव शहर में होली खेलें, रंग गुलाल लगाते।।
प्रेम रंग जीवन में भरना, बोलो सुंदर बोली।
फागुन में सब रंग लगाते, खेल रहे हैं होली।।

होली में सब रंग मिलाते, मार रहे पिचकारी।
नीला पीला रंग गुलाबी, पड़ता सब पर भारी।।
भाभी लुकती फिरती देखो, भीग गई है चोली।
फागुन में सब रंग लगाते, खेल रहे हैं होली।।

होली उत्सव आया भैया, आज गुलाल लगाओ।
बचें नहीं कोई भी घर में, सबको आज डुबाओं।।
द्वेष बैर को छोड़ो पल में, कर लें हँसी ठिठोली।
फागुन में सब रंग लगाते, खेल रहे हैं होली।।

शैलेन्द्र पयासी, साहित्यकार

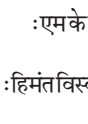

Bhupender Saraswat Sarthi
2m ·

इधर-उधर से---------
-
दुनिया में होली ही शायद एकमात्र ऐसा त्योहार है,
जिसकी तैयारी में नहाना कतई ज़रूरी नहीं है,
बल्कि यूँ कहें... कि होली के लिए तैयार होते....
समय नहाना "निषेध" है।
अन्य त्योहारों की तरह इस दिन नए-नए नहीं,
पुराने-पुराने कपड़े पहने जाते हैं।
-
होली बनावट छोड़कर असली चेहरे बाहर लाने...
का अवसर है, इसीलिए होली के दिन किसी भी..
भारतीय नागरिक की सूरत उसके आधार...
कार्ड से मिल सकती है,.. बुरा ना मानों.....
-
सभी का रंगोत्सव शुभ रहे:..

होली का पावन पर्व और नशे का प्रभाव

होली पर्व हमारे देश भारत में हिंदुओं का प्रमुख त्यौहार है ।होली बुराई का अंत और अच्छाई की जीत की जीत भक्त प्रहलाद की अनंत भक्ति से प्रसन्न होकर बालक प्रहलाद की रक्षा के लिए प्रभु भगवान नरसिंह अवतार में आए और दुष्ट हिरण कश्यप के पापों का अंत किया तब से हमारे देश में निरंतर होली मनाई जाती है ।

इस पावन पर्व पर लोग एक दूसरे को रंग लगाते हैं।

अबीर गुलाल लगाकर गले मिलते हैं दूसरे को होली के पावन पर्व की शुभकामनाएं बधाई देते हैं ।और मिठाई खाते हैं और मिलकर इस रंगमय उत्सव को मानते हैं। हमारे देश में ब्रज की होली, गोकुलधाम वृंदावन ,मथुरा में भगवान श्री कृष्ण की भक्ति में लोग होली मनाते हैं ।बहुत ही शानदार महोत्सव होता है इसी होली पर पर हमारे देश में कुछ सामाजिक तत्व अशांति फैलाने की कोशिश करते हैं कीचड उछालते हैं एक दूसरे को गोबर केमिकल पेस्ट लगाते हैं जिससे त्वचा पर प्रभाव पड़ता है और आंखों की रोशनी के जाने का डर रहता है रंग खेलते समय सावधानी बरतें कोई रंग केमिकल आंखों में

ना पड़े इस बात का ध्यान रखें उचित दूरी बनाकर रखें हमारे देश में जीवन अनमोल है कीमत समझे दूर से दूर से सोशल नेटवर्क के द्वारा ऑनलाइन व्हाट्सएप फेसबुक के द्वारा बधाई प्रेषित करते हैं होली रंगों से दूरी बनाए रखें और नशा करने वालों से दूर रहे शराब पीकर लोग उडदंग मचाते हैं होली पर शांति स्वार्थ बिगड़ने कोशिश करते हैं गाली-गलौज मारपीट दंगा होने का डर बना रहता है रंग में भंग डालने की कोशिश करते हैं पुलिस अपराधियों को होली के त्यौहार में शहर बिगड़ने के आरोप में जेल में बंद कर देती है जिससे अपराधियों के घर गृहस्थी परिवार, पत्नी, बच्चों पर सीधा असर पड़ता है ।हमें नशे से दूर रहना चाहिए हमें नशे से दूर रहना चाहिए नशा करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है तंबाकू गुटका, पान मसाला, गांजा, शराबी इत्यादि हमारे जीवन को नष्ट कर रहे हैं नशे हमारा जीवन नष्ट कर रहे हैं नशे के लत के शिकार में चोरी, अपराध, बलात्कार, हत्या, केस बढ़ रहे हैं ऐसे लोग परिवार का जीवन यापन करने में असमर्थ है कोई काम नहीं कर पाते थकावट महसूस होती है कमजोरी चक्कर आना सिर का भारी होना, पेट फूलना, निरंतर नशा करने से रोग और बीमारियां घेर लेती है ।शरीर कमजोर होता है शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाती है ऐसी स्थिति में मृत्यु भी हो सकती है नशा हमारे समाज का कुशाग्र व्यसन दुश्मन है इससे हमेशा दूर रहना चाहिए नशा छोड़ देना चाहिए नशा मुक्ति अभियान देश में चल रहा है उनसे संपर्क करना चाहिए नशा छोड़ने की दवाइयां शुरू कर देना चाहिए जिससे हम अपने अमूल जीवन को बचा सकते हैं जी है तो जहान है ।

तुझे अपनी जिंदगी से दूर कर रहा हूं।
तुझसे है मुझे नुकसान ऐ जहर छोड़ रहा हूं।।
पी पी कर अपनी जिंदगी को तबाह कर दिया।
जब आया मुझको होश खुद को दूर कर रहा हूं।।

शैलेन्द्र पयासी साहित्यकार
विजयराघवगढ़, कटनी, एमपी

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan Vishesh

वर्ष 03, अंक 364, नई दिल्ली, बुधवार 04 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 होली सिर्फ एक त्योहार नहीं, एक एहसास है

06 होली, बदलता समाज और मर्यादा की नई परिभाषाएँ

08 झारखंड में घर बुलाये तांत्रिक ने नाबालिग के साथ किया बलात्कार

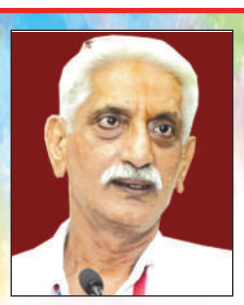

ऊपर से जिस्मों पर लगाए गए रंग,
तो कुछ ही दिनों में उतर जाएंगे।
पर प्रेम का रंग यदि चढ़ जाए
तो जीवन भर नहीं उतरता।

आइए इस होली पर हम सब एक-दूसरे को
दिल से सभी पुराने भूली बिसरी गलतियों को निकालकर क्षमा कर मन से गले मिलें

भगवान का स्मरण करते हुए
जीवन को सच्चे आनंद से भर दें।

ईश्वर आप सभी के जीवन में
सुख, शांति और भक्ति का रंग भरें
हैप्पी होली

संजय कुमार बाठला

पिंकी कुंडू

होली सिर्फ एक त्योहार नहीं, एक एहसास है

जब पूरा भारत रंगों में रंग जाता है, तब हमें याद आता है कि ज़िंदगी का असली रंग प्यार, अपनापन और इंसानियत है।

होली की कहानी हमें सिखाती है कि अहंकार और अन्याय ज्यादा दिन तक नहीं टिकते।

होलिका का दहन हमें संदेश देता है कि बुराई चाहे कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, जीत हमेशा सत्य की होती है।

लेकिन, ज़रा सोचिए क्या हम सच में होली का असली संदेश अपने जीवन में उतार रहे हैं?

आज भी हमारे समाज में कई "होलिकाएं" ज़िंदा हैं

1. नफरत और हिंसा
2. जाति और धर्म के नाम पर भेदभाव
3. महिलाओं के प्रति असम्मान
4. पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाले रासायनिक रंग और पर्यावरण प्रदूषण
5. सोशल मीडिया पर फैलती नकारात्मकता

आइए इस बार होली पर सिर्फ चेहरों को नहीं, अपनी सोच को भी रंगते हैं।

पर्यावरण - हितैषी होली मनाएँ प्राकृतिक रंगों का उपयोग करें, पानी बचाएँ और प्रकृति की रक्षा करें।

सम्मान के साथ होली खेलें "बुरा न मानो होली है" का मतलब यह नहीं कि हम किसी की मर्यादा या सीमा का उल्लंघन करें। सम्मान सबसे खूबसूरत रंग है।

खुशियाँ बाँटें इस होली किसी जरूरतमंद को याद करे। किसी गरीब बच्चे को मिठाई, किसी बुजुर्ग को समय, और किसी उदास चेहरे को मुस्कान दें।

इस बार होलिका दहन में अपना अहंकार, क्रोध और नफरत जला दे और अगले दिन सिर्फ प्रेम, सद्भाव और सकारात्मकता के रंग उड़ाएँ।

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करे, यह बिल्कुल निशुल्क है,
अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करे
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा
के जनहित कार्यों को समर्पित

20 सड़क सुरक्षा
महिला सुरक्षा
प्रदूषण
साइबर अपराध

अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है,
तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुलक आवेदन करें।

दिनांक: 29 मार्च (रविवार) समय - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
स्थान - कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001

आवेदन प्रक्रिया
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGY2Cw9
मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

ब्रज में देवता भी आते हैं होली खेलने

सौरभ वार्ष्णेय

भारत में होली केवल रंगों का त्योहार नहीं बल्कि सामाजिक एकता, प्रेम और उल्लास का प्रतीक है लेकिन जब बात तीन लोक से न्यारी ब्रज की बात आती है तो ब्रज की होली उसका स्वरूप और भी अद्भुत और अनूठा हो जाता है। अगर जीवन में मथुरा वृंदावन की होली जो कि द्वापर युग से आज तक अनवरत जारी मथुरा, वृंदावन, बरसाना और नंदगांव में मनाई जाने वाली होली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि सदियों पुरानी सांस्कृतिक परंपरा और आस्था का जीवंत उत्सव है। वहीं कुछ पंडों का ऐसा कहना है कि आज भी होली में शामिल होने देवता धरती पर आते हैं ओर इस भव्य सांस्कृतिक लोक को जनआनंद में बदल देते हैं।

ब्रज की होली का संबंध सीधे भगवान श्रीकृष्ण और राधा की लीलाओं से जुड़ा हुआ है। मान्यता है कि कृष्ण अपने सखाओं के साथ बरसाना जाकर राधा और उनकी सखियों के साथ होली खेलते थे। यही परंपरा आज भी लठमार होली के रूप में जीवित है, जिसमें महिलाएं पुरुषों को प्रतीकात्मक रूप से लाठियों से मारती हैं और पुरुष ढाल लेकर खुद को बचाते हैं। यह दृश्य केवल मनोरंजक ही नहीं, बल्कि लोक संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति भी है।

ब्रज की होली कई दिनों तक चलने वाला उत्सव है। यहां फूलों की होली, लड्डू होली, रंगभरनी एकादशी और लठमार होली जैसे अनेक आयोजन होते हैं। देश-विदेश से हजारों श्रद्धालु और पर्यटक इन आयोजनों को देखने के लिए आते हैं। मंदिरों में भक्ति गीत, रासलीला और पारंपरिक संगीत पूरे वातावरण को आध्यात्मिक और उत्सवमय बना देते हैं।

हालांकि समय के साथ इस उत्सव में कुछ चुनौतियां भी सामने आई हैं। बढ़ती भीड़, अव्यवस्था और कभी-कभी असामाजिक तत्वों की गतिविधियां इस पवित्र परंपरा की गरिमा को प्रभावित कर सकती हैं। प्रशासन और समाज दोनों की जिम्मेदारी है कि ब्रज की इस सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित और मर्यादित बनाए रखें।

ब्रज की होली हमें यह संदेश देती है कि जीवन में प्रेम, भाईचारा और आनंद का रंग सबसे महत्वपूर्ण है। यदि हम इस उत्सव की मूल भावना को समझें और इसे संजोए रखें, तो ब्रज की होली केवल एक क्षेत्रीय परंपरा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की वैश्विक पहचान बन सकती है।

तीन लोक से न्यारी ब्रज नगरी की सांस्कृतिक विविधता और लोकपरंपराओं की जीवंत प्रतीक है। यह उत्सव आध्यात्मिकता, प्रेम और लोकजीवन के अद्भुत संगम के रूप में सामने आता है।

ब्रज की होली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां उत्सव कई दिनों तक चलता है। फूलों की होली, रंगों की होली, फाग गीत, रसिया और मंदिरों में विशेष झांकियां—ये सब मिलकर वातावरण को भक्तिमय बना देते हैं। वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में खेली जाने वाली फूलों की होली का दृश्य अद्वितीय होता है। यह उत्सव सामाजिक भेदभाव को मिटाकर सभी को एक रंग में रंगने का संदेश देता है।

सांस्कृतिक

आज जब समाज में तनाव, प्रतिस्पर्धा और विभाजन की प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं, तब ब्रज की होली हमें प्रेम, सौहार्द और एकता का पाठ पढ़ाती है। हालांकि, बढ़ती भीड़, व्यावसायीकरण और सुरक्षा व्यवस्थाओं की चुनौतियां भी सामने हैं। प्रशासन और समाज दोनों की जिम्मेदारी है कि इस धरोहर की पवित्रता और गरिमा बनी रहे।

ब्रज की होली केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा का उत्सव है। यह हमें याद दिलाती है कि जीवन के रंग तभी सुंदर लगते हैं, जब उनमें प्रेम और सामंजस्य घुला हो। ब्रज की होली हमें यह संदेश देती है कि जीवन में रंग, प्रेम और मेल-मिलाप का महत्व कितना बड़ा है।

चैतन्यता की होली : मन की मरुभूमि पर बरसते खुशियों के रंग

उमेश कुमार साहू

प्रकृति जब अपना पुराना चोला उतारकर नव-श्रृंगार करती है, जब अमराइयों में बौर महकने लगती है और टेसू के फूल जंगलों में धधकने लगते हैं, तब समझ लीजिए कि 'होली' आ गई है। यह केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि जड़ता के विरुद्ध चैतन्य की उद्घोषणा है। अंग्रेजी कवि भले ही मार्च के बाद आने वाले दिनों को 'क्रूअलेस्ट मंथ' कहें, लेकिन भारतीय मानस के लिए यह फागुन की वह मस्ती है, जहाँ दुष्यंत कुमार के शब्दों में - "जिएं तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले, मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए।"

इतिहास और मिथकों का अनूठा संगम

होली की जड़ें हमारी प्राचीन सभ्यताओं और वेदों तक गहरी हैं। ऋग्वेद में जिस 'नवसस्येष्टि यज्ञ' का वर्णन है, वह दरअसल अधपके अन्न (होला) को अग्नि को समर्पित करने की परंपरा थी। आज भी ग्रामीण अंचलों में गेहूं और चने की बालियों को होली की आग में भूनकर 'होरा' या 'होलक' के रूप में प्रसाद ग्रहण किया जाता है।

पौराणिक रूप से यह पर्व कामदेव के पुनर्जन्म और शिव की तपस्या के फल स्वरूप 'अनंग' के रूप में उनकी व्याप्ति का उत्सव है। वहीं, भक्त प्रहलाद और होलिका की कथा हमें संदेश देती है कि जब बुराई की आग प्रचंड हो, तब केवल 'निर्मल भक्ति' और 'पवित्रता' ही सुरक्षित रह सकती है। यह पर्व याद दिलाता है कि हिरण्यकश्यप जैसा अहंकार चाहे कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, वह अटूट श्रद्धा के सामने भस्म हो जाता है।

सांस्कृतिक विविधता का इंद्रधनुष

भारत के मानचित्र पर होली के अलग-अलग रंग बिखरे हैं।

ब्रज की लठमार होलीः यहाँ का रंग-गुलाल केवल धूल नहीं, बल्कि गोप-गोपियों के प्रेम और समर्पण की पराकाष्ठा है।

बंगाल का डोल उत्सवः चैतन्य महाप्रभु की पालकी यात्रा के साथ कृष्ण-चेतना का विस्तार।

महाराष्ट्र की रंगपंचमीः शिवाजी महाराज के समय से चली आ रही वीरता और उल्लास की परंपरा।

पंजाब का होला-मोहल्लाः सिख समुदाय द्वारा शक्ति प्रदर्शन और शौर्य का संगम।

तमिलनाडु में इसे 'काम-दहनम' के रूप में मनाया जाता है, जो काम और वासना के त्याग का प्रतीक है। वास्तव में, कश्मीर से कन्याकुमारी तक यह पर्व भाषाई और क्षेत्रीय सीमाओं को तोड़कर 'साझा विरासत' का उत्सव बन जाता है।

हुड़दंग नहीं, यह 'हवन' का पर्व है

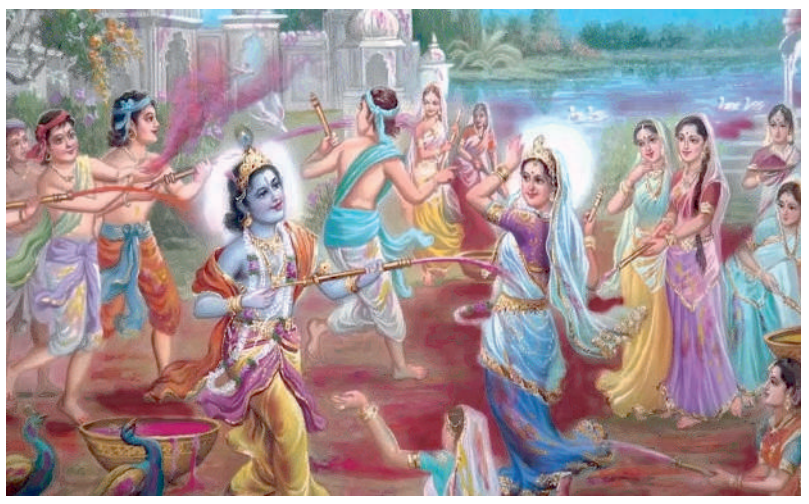

होली एक 'सोशल हीलर' (सामाजिक मरहम) का काम करती है। यह वह दिन है जब ऊंच-नीच, वर्ग-भेद और पुरानी शत्रुता के सारे दाग धुल जाते हैं। सातवीं शताब्दी में हर्ष ने 'रत्नावली' में और भवभूति ने 'मालती-माधव' में इस बात का सुंदर चित्रण किया है कि कैसे राजा और प्रजा के बीच की दूरी इस दिन समाप्त हो जाती थी।

आज के दौर में होली के स्वरूप में कुछ विकृतियाँ आई हैं, जिन्हें सुधारना आवश्यक है।'पर्व का अर्थ है आनंद, और आनंद तब होता है जब मन पवित्र हो।" होली असल में एक 'सामूहिक हवन' है। जब हम सामूहिक रूप से कंडे, समिधा और औषधीय लकड़ियां (आम, पीपल, बेल) जलाते हैं, तो वह वातावरण की शुद्धि का वैज्ञानिक तरीका है। वर्तमान समय में रासायनिक रंगों के स्थान पर हमें पुनः प्राकृतिक गुलाल (टेसू, हल्दी, चंदन) की ओर लौटना होगा। आई.आई.टी. कानपुर के शोध भी चेतावनी देते हैं कि सिंथेटिक रंगों में मौजूद भारी धातुएं हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए घातक हैं। हमें समझना होगा कि 'बुरा न मानो होली है' का अर्थ अश्लीलता या अभद्रता का लाइसेंस नहीं बल्कि आपसी कटुता को मिटाने का अवसर है।

मनोवैज्ञानिक और सामाजिक महत्व

होली एक 'सोशल हीलर' (सामाजिक मरहम) का काम करती है। यह वह दिन है जब ऊंच-नीच, वर्ग-भेद और पुरानी शत्रुता के सारे दाग धुल जाते हैं। सातवीं शताब्दी में हर्ष ने 'रत्नावली' में और भवभूति ने 'मालती-माधव' में इस बात का सुंदर चित्रण किया है कि कैसे राजा और प्रजा के बीच की दूरी इस दिन समाप्त हो जाती थी। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से, रंगों का हमारे अवसाद पर गहरा असर पड़ता है। लाल, पीला और हरा रंग हमारे भीतर नई ऊर्जा का संचार करते हैं और 'होली का हुड़दंग' दरअसल दमित भावनाओं को बाहर निकालने का एक माध्यम है।

ग्लोबल होती होली : एक नई शुरुआत

आज होली सात समंदर पार तक पहुँच चुकी है। विदेशी पर्यटक हज़ारों की संख्या में भारत की गलियों में सराबोर होने आते हैं। यह 'वसुधैव कुटुंबकम' का जीवंत उदाहरण है। जब हॉलीवुड से लेकर बॉलीवुड तक होली के गीतों पर थिरकता है, तो वह भारतीय संस्कृति की विजय यात्रा होती है। यह पर्व हमें सिखाता है कि अतीत के दुःख को भविष्य के कंधे पर लादकर नहीं चलना चाहिए, बल्कि वर्तमान के रंगों में डूबकर एक 'नई शुरुआत' करनी चाहिए।

निष्कर्ष : प्रेम का जवाब प्रेम से

अंततः, होली हमें सूत्र सिखाती है कि— "प्रेम का जवाब प्रेम से ही देना चाहिए।" यदि जीवन में केवल अवसाद और गांभीर्य ही रहेगा, तो जिएंगे कब? होली वह अंतराल है जहाँ हम अपनी थकान उतारते हैं और नई ताजगी के साथ जीवन की रणभूमि में उतरने के लिए तैयार होते हैं।

आइए, इस बार की होली में केवल चेहरों को ही नहीं, बल्कि मन को भी प्रेम के रंग में रंगें। पुराने गिले-शिकवे होलिका की अग्नि में स्वाहा कर दें और गुलाल के साथ भाईचारे की एक ऐसी खुशबू बिखेरें जो साल भर हमारे रिश्तों को महकाती रहे।

बदलते दौर में फीके पड़ते होली के रंग

प्रमोद दीक्षित मलय

त्योहार-उत्सव हमारे दैनंदिन जीवन से गहराई से जुड़े होते हैं। त्योहार केवल उत्साह, उमंग एवं उल्लास के माध्यम भर नहीं हैं अपितु हमारा पारिवारिक और सामाजिक जीवन एवं कार्य-व्यवहार कैसा हो, यह संदेश भी देते हैं। समाज एवं देश के विकास के लिए पारस्परिक मैत्री, भ्रातृत्व एवं सुख-दुख में साझेपन का भाव महत्वपूर्ण आधार होते हैं, त्योहार इस भावना को सुदृढ़ करते हैं। त्योहार ही हैं जो हमारी सामाजिक चेतना, सहकारिता एवं बंधुत्व भाव को ऊर्जस्वित करते हैं। त्योहार मानव जीवन के साथ ही प्रकृति एवं अन्य जीव-जंतुओं के सह-अस्तित्व से ही दुनिया के समृद्ध, सुखी एवं सामंजस्य पूर्ण होने की पैरवी करते हैं। प्रकृति के साथ आत्मीय सम्बन्ध की व्याख्या करते हैं।

व्यक्ति, परिवार एवं देश की सुख, शांति एवं समृद्धि परस्पर सख्य, सहकार एवं समन्वय से सम्भव है न कि विखंडन, विषमता, बिछुड़न से। अलगावों से केवल आग सुलगती है जो सामाजिक एकता, अखंडता के भावों का जारण करती है। विविध त्योहार ही व्यक्ति एवं समाज को क्षेत्र, भाषा, लिंग, रंग, जातिगत विभेद एवं अलगावों से मुक्त कर मानवीय गरिमामय साहचर्य, सह-अस्तित्व एवं सहयोग के पथ पर स्नेह, संवेदना एवं प्रीति के रंग बिखेरते हैं। रंगों का त्योहार होली इन अर्थों में निश्चित रूप से लोक जीवन में प्रेम, सौहार्द एवं मधुरता के बहुरंगी पुष्प विकसित करते हुए समता-ममतायुक्त एक समरस समाज का निर्माण करता है।

होली के रंग जीवन को इकरंगी एवं एकांगी हो जाने से बचाते हैं पर आधुनिकता की अंधी दौड़ में भागती पीढ़ी क्या इन रंगों के महत्व से परिचित हैं, क्या उनके हृदय अपनी सुमधुर परम्पराओं, सुखद रीतियों और मृदुल भावनाओं से ओत-प्रोत हैं जो हमेशा सामाजिक एकत्व की धारा के पोषक रही हैं? क्या ऐसा नहीं लगता कि त्योहार अपनी गरिमा खो रहे हैं, केवल औपचारिकता तक सिमट कर रह गये त्योहारों की रचनात्मकता की धार कुंद हो गई है। क्या फीके पड़ते होली के विविध रंग लोक जीवन में परस्पर प्रेम, माधुर्य, मैत्री से गुंथी रिश्तों की चादर के ताने-बाने को सम्बल, सरसता, सजलता, सांत्वना एवं शुचिता दें सकेंगे, विचारणीय है।

होली का त्योहार वास्तव में प्रकृति आधृत सामाजिक समरसता का त्योहार है। यह मानव मन के आंगन में खिंची भेद की दीवारों के ढहाने का त्योहार है। यह ऋतु परिवर्तन और फसलों के स्वागत-सत्कार का त्योहार है। नित्यप्रति के तमाम दबावों से मुक्त हो आनंद के रंग में रंग जाने का त्योहार है। सत्ता के विरुद्ध लोक के सत्य की जीत की खुशी का त्योहार है। भगवान, भक्त और भक्ति के एकाकार हो जाने के रहस्य के समझने-बूझने का त्योहार है। व्यष्टि से समष्टि के कल्याण पथ पर लोकजीवन के अग्रसर होने की प्रेरणा एवं प्रवाह का त्योहार है। सांस्कृतिक धरोहर गीत, संगीत, नृत्य के जीने और नवल पीढ़ी को सौंपने का त्योहार है पर सवाल यही है कि क्या आज हम आज ऐसा कर पा रहे हैं? क्या ऐसा नहीं लगता कि डीजे के शोर में ढोल, झील, नक्कारा, झांझ, मंजीरा के स्वर ओजहीन हो गये हैं। फाग और राई की तान मंद पड़ गई है। ठंडाई की शीतलता कोल्ड ड्रिंक्स तले दब गयी है। टेसू, हल्दी, गुलाब के प्राकृतिक स्वस्थ रंग केमिकल रंगों की भेंट चढ़ गये।

प्रेम भरा हुरियारों का उत्साह अब हुल्लड़ और फूहड़ व्यवहार में बदल गया है। आज बच्चे और बुजुर्ग घरों से बाहर नहीं निकलते कि पता नहीं कौन कब आकर पेंट, ग्रीस, कोयला पोत दें। रंगों की ओट में मन का वैमनस्य निकाल कौन कब रंजिश भुना लें। समझदार लोग घरों में स्वयं को कैद कर लिए हैं और हुल्लड़, तमाशा, शोरगुल सड़कों पर पसर गया है। पड़ोस में बजते डीजे की तेज कर्कश आवाज घरों में वृद्ध, बच्चों और रोगियों के लिए जानलेवा साबित हो रहा है, पर कौन मना करे। यह होली जैसे पावन गरिमामय त्योहार की भावना का पतन है। मुझे लगता है त्योहारों की गरिमा, शालीनता, संवेदना और आदर्श बचाये और बनाये रखने के लिए समाज के जागरूक और जिम्मेदार लोगों को आगे आकर पहल करनी होगी ताकि त्योहारों की जीवंतता, मर्यादा और सहजता बनी रहे।

मेरे मानस पटल पर अनायास बचपन और युवाकाल में अपने गांव की होली के दृश्य उभर आये हैं। फागुन शुरू होते ही होली की तैयारी आरंभ हो जाती। गांव में केवल एक जगह पर सामूहिक होलिका दहन होता। उस स्थान को साफ-स्वच्छ कर गाय के गोबर से लीपकर बसंत पंचमी को होली का शुभ लिया जाता और पलास की टहनी गाड़ दी जाती। रंग एकादशी तक वहां पर काफी लकड़ी एकत्रित हो जाती। होली के दिन सुबह से ही गाय के गोबर से बने बल्ले (दो इंच के चट्टे गोला शंक्वाकार उपले) मूंज की सुतली में गूंथकर इकट्ठे किये जाते और ढेर लगा दिया जाता। शाम या रात्रि में मुहूर्त समय अग्नि प्रज्वलित की जाती। उस अवसर पर एकत्रित समुदाय अपने बल्लों की माला का एक-दूसरे से आदान-प्रदान करते, और एक-दो माला दहकती होलिका में भेंट कर पांच परिक्रमा लगाते। चना, गेहूं, जौ की अधपकी बालियां एक लम्बी लकड़ी में बांधकर भूनी जातीं। सभी व्यक्ति किसी बाल्टी या बर्तन में होली की आग घरों को लेकर अपने मुहल्ले और घरों में होलिका दहन करते, फाग गाते। बेसन का उबटन लगाकर अग्नि में डालते जो एक प्रकार से मन के मैल एवं विकारों के त्याग का प्रतीक है। दूसरे दिन रंग खेले जाते। घरों में पूड़ी, पापड़, गुझिया, सेव, खुरमा आदि बनाये जाते। शाम को सभी एक-दूसरे के घरों में जाकर अबीर-गुलाल लगाकर होली मिलते। फाग की मंडलियां मुहल्लों में देर रात तक फाग गायन करती। सर्वत्र हंसी-खुशी, शालीन मजाक-ठिठोली, देवर-भौजाई की मर्यादित नोंक-झोंक का आनंद हिलोरें लेता।

ऐसे दृश्य हरेक गांव में दिखते, किंतु बाजारवाद और आधुनिकता के इस युग में होली के ये मनमोहक दृश्य लुप्तप्राय हैं, होली के प्रेम रंग फीके पड़ रहे हैं। पड़ोसी भी वाट्सएप पर होली की बधाई भेज औपचारिकता पूरी कर रहे हैं। त्योहार मन मिलाते हैं, मीत बनाते हैं; यह भाव अब तिरोहित हुआ जा रहा। आइए, मिलकर पहल करें ताकि त्योहारों की मर्यादा और मूल स्वरूप बचा रहे और हममें बचा रहे अपनी माटी से जुड़ा कोमल मधुर प्रेमभरा व्यवहार। हम सभी कलुषता, कुभाव, हिंसा, अशांति, क्रोध, कुंठा, शत्रुता आदि नकारात्मक प्रवृतियों से बचें और जीवन में त्योहार की सकारात्मक प्रवृत्तियों यथा- शालीनता, सौजन्यता, सामूहिकता, सहकारिता एवं संवेदनशीलता तथा सुख-शांति, समृद्धि का सामंजस्य हो, यह भावना है।

दिव्यांगों की सुविधा में मददगार साबित होगा प्रधानमंत्री दिव्याशा-वयोश्री केंद्र'

दिव्यांगों की सुविधा में मददगार साबित होगा प्रधानमंत्री दिव्याशा-वयोश्री केंद्र'

दिव्यांग जनों की सेवा के लिए प्रधानमंत्री दिव्याशा-वयोश्री केंद्र एक अनुकरणीय पहल

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने एपीसीपीएल व एलिम्को के सहयोग से रेडक्रॉस भवन में एपीसीपीएल के सीएसआर सहयोग से 'प्रधानमंत्री दिव्याशा-वयोश्री केंद्र' का किया उद्घाटन कार्यक्रम में 89 दिव्यांग जनों को 53 .30 लाख रुपये की राशि के उपकरण वितरित

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 03 मार्च। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने मंगलवार को रेडक्रॉस भवन परिसर में एपीसीपीएल के सीईओ दलीप कईबोर्ता और एलिम्को के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

प्रवीण कुमार की गरिमामयी उपस्थिति में दिव्यांगों की सुविधा के लिए 'प्रधानमंत्री दिव्याशा-वयोश्री केंद्र' का विधिवत उद्घाटन किया। इस दौरान डीसी ने 89 दिव्यांग जनों को 53.30 लाख रुपये की राशि के कृत्रिम उपकरण वितरित किये।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की एक महत्वपूर्ण पहल के तहत यह केंद्र देश का ऐसा पहला प्रधानमंत्री दिव्याशा-वयोश्री केंद्र है जिसे कॉर्पोरेट इकाई एपीसीपीएल द्वारा सीएसआर के तहत अडॉप्ट किया गया है।

उन्होंने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि दिव्यांगों को ₹पहले कृत्रिम अंगों के लिए सहायता शिविरों का इंतज़ार करना पड़ता था, लेकिन अब 'प्रधानमंत्री दिव्याशा-वयोश्री केंद्र' के माध्यम से स्थाई तौर पर ऑन-साइट जांच और उपकरणों की उपलब्धता एक ही स्थान पर सुनिश्चित होगी।₹ उन्होंने कहा कि एपीसीपीएल और एलिम्को के बीच झज्जर जिला मुख्यालय पर स्थापित किए गए इस केंद्र के तहत दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण प्रदान करने हेतु 2 करोड़ रुपये का एमओयू साइन किया गया है।

डीसी ने कहा कि रेड क्रॉस भवन में इस केंद्र की स्थापना से जिले के जरूरतमंदों को एक ही छत के नीचे त्वरित सहायता मिल सकेगी, जोकि दिव्यांग जनों की सेवा के लिए एक अनुकरणीय पहल है। यह केंद्र भारत सरकार की 'एडिप' और 'राष्ट्रीय वयोश्री योजना' के तहत संचालित होगा।

केंद्र के उदघाटन अवसर पर 89 दिव्यांग जनों को लगभग 53.30 लाख रुपये की लागत के बैटरी चलित तिपहिया साइकिल, व्हीलचेयर, श्रवण यंत्र और अन्य सहायक उपकरण वितरित किए।

उन्होंने इस प्रभावी व्यवस्था के लिए दोनों संस्थानों का तहेदिल से आभार व्यक्त किया।

एपीसीपीएल के सीईओ दलीप कईबोर्ता ने कहा, ₹यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि एलमिको के सहयोग से प्रधानमंत्री दिव्याशा-वयोश्री केंद्र' झज्जर में स्थापित हुआ है। उन्होंने कहा कि समाज के प्रत्येक दिव्यांगजन और वरिष्ठ नागरिक तक सुविधाएं समान रूप से पहुंचे, इसके लिए वे सदैव तत्पर हैं। उन्होंने कहा कि लाभार्थियों के फीडबैक के आधार पर दिव्यांगजनों की सुविधा के लिए कृत्रिम उपकरणों को और अधिक उन्नत बनाने के लिए सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं।

एलिम्को के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक प्रवीण कुमार ने संस्थान की विकासात्मक गतिविधियों की चर्चा करते हुए कहा कि विशेषकर दिव्यांग जनों को स्वावलंबन और गतिशीलता प्रदान करना एलमिको की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने उपस्थित दिव्यांग जनों को विश्वास दिलाया कि इस केंद्र के माध्यम से कोई भी पात्र लाभार्थी सहायता से वंचित नहीं रहेगा और एलिम्को भविष्य में और भी कृत्रिम अंग जरूरत अनुरूप उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेगी।

इस बीच एलमिको के महाप्रबंधक अजय चौधरी ने डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल सहित अन्य विशिष्ट अतिथियों और सभी उपस्थित जनों का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर रेडक्रॉस सोसायटी के सहायक सचिव पवन शर्मा, एपीसीपीएल से उमेश कुमार, स्मृति रानी, प्रवक्ता कंचन थरेजा सहित अन्य अधिकारीगण व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

नवरात्र मेला में श्रद्धालुओं के लिए जरूरी सुविधाएं प्रदान करना सुनिश्चित करें अधिकारी : डी सी

- डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बेरी में नवरात्र मेला की तैयारियों को लेकर अधिकारियों की बैठक में दिए जरूरी दिशा निर्देश
- बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में 19 मार्च से 2 अप्रैल तक आयोजित होगा मेला

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर,03 मार्च। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने मंगलवार को धर्मनगरी बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में लगने वाले चैत्र नवरात्र मेले की तैयारियों को लेकर अधिकारियों की बैठक ली और आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए। इस अवसर पर डीसीपी लोगेश कुमार पी भी उपस्थित थे।

डीसी ने बैठक में 19 मार्च से 2 अप्रैल तक लगने वाले चैत्र नवरात्र मेला के दौरान धर्मनगरी बेरी आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए आवश्यक प्रबंधों को लेकर विभागीय अधिकारियों के साथ चर्चा की। माता भीमेश्वरी देवी श्राइन बोर्ड की सीईओ एवं एसडीएम रेणुका नांदल ने डीसी को मेला की तैयारियों को लेकर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मुख्य मेला 24 मार्च से 26 मार्च को होगा।

डीसी ने कहा कि बेरी मेला में सप्तमी और अष्टमी के दिन मां भीमेश्वरी देवी के दर्शनों के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है। ऐसे में मेला के पिछले अनुभवों के आधार पर श्रद्धालुओं का अनुमान लगाते हुए मेला परिसर में सुरक्षा व अन्य मूलभूत सुविधाओं को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मेला परिसर में ड्यूटी देने वाले कर्मचारियों को पहचान पत्र संबंधित विभाग द्वारा जारी किए जाएंगे। साथ ही पार्किंग, सुरक्षा, पीने के पानी, रात्रि के समय रोशनी के इंतजाम, स्वास्थ्य सुविधाएं, अस्थाई शौचालय, सीसीटीवी, माइक सर्विस, अग्निशमन सेवाएं आदि इंतजामों की व्यवस्था को लेकर संबंधित अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए।

डी सी ने मेला के संवेदनशील दिवसों की पहचान को लेकर भी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि श्रद्धालुओं की उमड़ने वाली भीड़ को लेकर कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए ड्यूटी मजिस्ट्रेट भी नियुक्त किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि व्यवस्था करते समय यह ध्यान रखा जाए कि धर्मनगरी बेरी के मेले में पहुंचने वाले किसी भी श्रद्धालु माता के दर्शन करने व आवागमन में को कोई भी परेशानी न हो। उन्होंने पशु मेला को लेकर भी बीडीपीओ और पशुपालन विभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

मेला के दौरान लगने वाले भंडारों में सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूरी तरह पाबंदी रहेगी। इसके लिए प्लास्टिक के स्थान पर स्टील बर्तन का उपयोग किया जाये। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को मंदिर परिसर में नवरात्र से ही मेडिकल यूनिट स्थापित करने के निर्देश दिए। साथ ही श्रद्धालुओं के लिए पंजीकरण सुविधा पहले दिन से शुरू करने की बात कही।

बैठक में इन अधिकारियों और गणमान्य व्यक्तियों की रही उपस्थिति

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे आईएएस, एसीपी सुरेंद्र सिंह तहसीलदार शेखर, बीडीपीओ राजाराम, नपा सचिव पूजा साहू, नायब तहसीलदार सुरेंद्र शर्मा, एसएमओ डॉ सुभाष चन्द्र, देवी मंदिर से पंडित कुलदीप वशिष्ठ, पीडब्ल्यूडी के एक्सईएन सुमित कुमार, जनस्वास्थ्य विभाग के एक्सईएन दिनेश कौशिक सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रियावल्लभ कुंज में सप्तदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के विश्राम पर हुआ होली महोत्सव का आयोजन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। पुराना बजाजा/छीपी गली स्थित प्रियावल्लभ कुंज में श्रीहित परमानंद शोध संस्थान एवं श्रीहित उत्सव चैरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में चल रहा सप्तदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ महोत्सव विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य धूमधाम से सम्पन्न हुआ।जिसके अंतर्गत व्यासपीठ से भागवत प्रवक्ता आचार्य रसिक वल्लभ नागार्च ने देश के विभिन्न प्रांतों से आए समस्त भक्तोंश्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत महापुराण की अमृतमयी कथा का समापन कराया।महोत्सव के समापन पर प्रख्यात भजन गायक मुकुल द्विवेदी, पण्डित गणेश शर्मा एवं राम गोपाल शास्त्री आदि ने संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य होली के भजनों, पदों व रसियाओं का गायन किया।जिन पर समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं द्वारा फूलों व रंग-गुलाल की होली खेली गई।

इस अवसर पर प्रियावल्लभ कुंज के सेवाधिकारी आचार्य विष्णुमोहन नागार्च एवं प्रख्यात भागवताचार्य श्रीहित ललित वल्लभ नागार्च द्वारा

फगुआ वितरित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से श्रीमती कमला नागार्च, श्रीमती लक्ष्मी नागार्च, प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, परम हितधर्मी डॉ. चंद्रप्रकाश शर्मा, बबलू भैया (दिल्ली), पण्डित रासबिहारी मिश्रा, पण्डित जुगल किशोर शर्मा, पण्डित तरुण मिश्रा, पण्डित भरत शर्मा, धर्मेंद्र मिश्रा, डॉ. नीलेश अग्रवाल, कमल मिश्रा, महेंद्र मिश्रा, पूरन किशोर शर्मा, सुमनकांत पालीवाल, डॉ. राधाकांत शर्मा, हितवल्लभ नागार्च, डॉ. राजीव नागार्च, चित्रा शर्मा, प्रिया मिश्रा, कीर्ति नागार्च, मीना शर्मा, दिव्यानंद, रसानंद, प्रेमानंद, श्यामा नीखरा (जबलपुर), हर्ष शर्मा, जीतू सैन, राधा रमण पाठक, दिलीप हलवाई, मोहित शर्मा, गोपी गुप्ता (ग्वालियर), बाबा गोपाल दास पखावजी आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।महोत्सव का समापन सन्त, ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।इसके अलावा दूध, मेवा व केसर युक्त ठंडाई और सूजी के हलवा का वितरण प्रिया वल्लभ कुंज के द्वार पर किया गया। जिसको सहस्त्रों राहगीरों ने ग्रहण किया।

रबी फसलों के अवशेष जलाने पर प्रतिबंध, उल्लंघन करने पर होगी दंडात्मक कार्रवाई : जिलाधीश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 3 मार्च। जिलाधीश स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए जिला की राजस्व सीमा में रबी फसलों, विशेषकर गेहूं व सरसों के अवशेषों/पराली को खेतों में जलाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के आदेश जारी किए हैं।

जिलाधीश की ओर से जारी आदेशों में कहा गया है कि कटाई के उपरांत खेतों में गेहूं व सरसों के अवशेषों को जलाने से भीषण आग लगने की संभावना बनी रहती है, जिससे कानून-व्यवस्था की स्थिति प्रभावित हो सकती है तथा जन सुरक्षा एवं शांति को गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। उन्होंने बताया कि सामान्यतः किसान कंबाइन मशीन से कटाई के बाद अथवा हाथ से फसल काटने के पश्चात खेत में बचे ठूंठों में आग लगा देते हैं, जिससे व्यापक आर्थिक, पर्यावरणीय एवं स्वास्थ्य संबंधी दुष्प्रभाव सामने आते हैं। फसल अवशेषों को जलाने से मिट्टी में मौजूद आवश्यक कार्बन तत्व, सूक्ष्म पोषक तत्व एवं लाभकारी सूक्ष्मजीव नष्ट हो जाते हैं, जिससे भूमि की उर्वरता में कमी आती है। इसके अतिरिक्त धुएं से वायु प्रदूषण बढ़ता है तथा फेफड़ों, हृदय एवं श्वसन संबंधी रोगों से ग्रस्त व्यक्तियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, खांसी, घुटन तथा ऑक्सीजन की कमी जैसी समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं। पर्यावरण में ऑक्सीजन का स्तर घटने तथा समग्र पारिस्थितिकी तंत्र को क्षति पहुंचने का भी खतरा रहता है।

यह आदेश तत्काल प्रभाव से 03 मई तक की अवधि के लिए प्रभावी रहेगा।

आदेश का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 के अंतर्गत सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

जिला की 14 पंजीकृत गौशालाओं को 2.55 करोड़ रुपये से अधिक का चारा अनुदान

गौशाला संचालकों ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का जताया आभार

झज्जर, 03 मार्च। जिला की 14 पंजीकृत गौशालाओं को मंगलवार को बड़ी राहत मिली जब सोनीपत के भटगांव में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने चारा अनुदान के रूप में 2 करोड़ 55 लाख 32 हजार 325 रुपये की राशि प्रदान की। यह अनुदान राशि गौशालाओं को तिमाही आधार पर चारे की व्यवस्था के लिए दी जाएगी, जिससे गौवंश के बेहतर पालन-पोषण में सहायता मिलेगी।

कार्यक्रम के बाद जिला के गौशाला संचालकों और गो सेवकों ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए इस पहल को गौ संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा समय-समय पर दिए जा रहे सहयोग से गौशालाओं को आर्थिक मजबूती मिल रही है और बेसहारा गौवंश की देखभाल सुचारू रूप से की जा रही है।

गौ सेवा आयोग के सदस्य एवं झज्जर गौशाला के प्रधान प्रमोद बंसल ने मुख्यमंत्री का धन्यवाद करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार गौ सेवा के प्रति गंभीर है और यह अनुदान राशि गौशालाओं के संचालन में बड़ी सहायक सिद्ध हो रही है। उन्होंने कहा कि चारे की बढ़ती लागत के बीच यह सहयोग गौशालाओं के लिए संजीवनी के समान है।

श्री कृष्ण गौशाला खेड़का गुर्जर के प्रधान सतपाल सिंह ने भी मुख्यमंत्री का आभार जताते हुए कहा कि सरकार के इस निर्णय से गौशालाओं को स्थायित्व मिलेगा और गौवंश की बेहतर देखभाल संभव हो पाएगी। उन्होंने कहा कि गौ सेवा से जुड़े सभी लोग इस सहयोग के लिए प्रदेश सरकार के प्रति कृतज्ञ हैं।

इसके अलावा गौ सेवा आयोग के पूर्व सदस्य पंडित संत सुरहेती सहित विभिन्न गौशाला संचालकों ने भी मुख्यमंत्री की प्रशंसा करते हुए कहा कि सरकार की यह पहल गौ संरक्षण और संवर्धन को नई दिशा देगी।

जिला की सभी 14 पंजीकृत गौशालाओं को मिली इस अनुदान राशि से चारे की व्यवस्था सुदृढ़ होगी और गौशालाओं में रह रहे गौवंश को पर्याप्त पोषण मिल सकेगा। गौ सेवकों ने उम्मीद जताई कि भविष्य में भी इसी प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा, जिससे गौ संरक्षण का कार्य और अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सके।

श्रीसंकीर्तन भवन धूमधाम से सम्पन्न हुआ संतप्रवर प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज का 36 वां द्वि-दिवसीय प्रभु मिलन एवं होली महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। वंशीवट क्षेत्र स्थित संकीर्तन भवन में श्रीसंकीर्तन भवन धार्मिक न्यास ट्रस्ट के तत्वावधान में ब्रह्मलीन संतप्रवर प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज का 36 वां द्विदिवसीय प्रभु मिलन महोत्सव एवं होली महोत्सव अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। जिसके अंतर्गत संतप्रवर प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज की प्रतिमा का पंचामृत से अभिषेक किया गया।साथ ही वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन किया गया।

इस अवसर पर आयोजित संत-विद्वत सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्रीमज्जगद्गुरु श्रीनाभापीठाधीश्वर स्वामी सुतीक्ष्णदास देवाचार्य महाराज एवं पातालपुरी पीठाधीश्वर स्वामी बालक दास महाराज (काशी) ने कहा कि गौत्र₹षि संत शिरोमणि प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज परम निष्पृह व वीतरागी संत थे। उनके जीवन में ज्ञान व भक्ति का अद्भुद समन्वय था। उन्होंने वेदव्यासजी द्वारा रचित श्रीमद्भागवत महापुराण का ब्रजभाषा में छप्पय और दोहों के मध्य अनुवाद कर ₹भागवत चरित₹ नामक ग्रंथ की रचना की।इसीलिए वे व्यासावतार कहे जाते हैं।

बल्देव स्थित दाऊजी मन्दिर के पूर्व रिसीवर आर. के. पाण्डेय एवं पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री ने कहा कि संत प्रवर प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज की गौ भक्ति, विप्र भक्ति व संत भक्ति प्रणम्य है।वे भगवद स्वरूप थे।वह धर्म व अध्यात्म जगत की बहुमूल्य निधि हैं।

भागवताचार्य गोपाल भैया महाराज व आचार्य विनय त्रिपाठी ने कहा कि हमारे सदगुरुदेव सनातन वैदिक संस्कृति के परम उपासक, राष्ट्र हित चिन्तक व गौभक्त संत थे। उन्होंने धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज के साथ रहकर गौहत्या आन्दोलन का नेतृत्व किया।

प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ गोपाल चतुर्वेदी एवं आचार्यशिवम साधक महाराज ने कहा कि संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज सेवा के मूर्तिमान स्वरूप थे।उन्होंने जीवन भर गौ, संत, ब्राह्मण आदि की निस्वार्थ भाव से सेवा की।उनके द्वारा स्थापित किए गए सेवा प्रकल्पों से आज भी असंख्य व्यक्ति लाभान्वित हो रहे हैं।

महोत्सव में महंत रामचंद्र दास महाराज, पण्डित उमाशंकर पाण्डेय, आचार्य मंगेश दुबे, आचार्य राजू भैया, डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री महाराज, पंडित देवकीनंदन शर्मा (संगीताचार्य), महंत सुंदरदास महाराज, भगवताचार्य गोपाल भैया महाराज, रासाचार्य स्वामी रामशरण शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा, प्रवीण त्रिपाठी, आचार्य जुगल महाराज, आचार्य मुकेश मोहन शास्त्री, आचार्य बुद्धि प्रकाश शास्त्री, आचार्य शिवांश भाई, प्रमुख समाजसेवी ₹पंजाब रत्न₹ श्रीमती मनप्रीत कौर (लुधियाना), आचार्य अंशुल पाराशर, आचार्य सुरेशचन्द्र शास्त्री, आचार्य युगल किशोर कटारे, आचार्य चैतन्य किशोर, आचार्य विमल कृष्ण पाठक, आचार्य पंकज मिश्रा, सन्त निवासाचार्य एवं पार्षद सुमित गौतम आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। संचालन पण्डित बिहारीलाल शास्त्री ने किया।धन्यवाद ज्ञापन विनय त्रिपाठी एवं भागवताचार्य गोपाल भैया ने किया।इससे पूर्व प्रख्यात भजन गायक मुकुल द्विवेदी ने संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य होली से सम्बंधित भजनों, पदों व रसियाओं का गायन किया।जिस पर समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं ने रंग, गुलाल और फूलों की जबरदस्त होली खेली।महोत्सव का समापन संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।

भारत विकास परिषद द्वारा विश्व वन्यजीवन दिवस समारोह का आयोजन
प्रकृति की रक्षा करना मानव का नैतिक दायित्व है- सुरेश जैन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। 2 मार्च 2026 को भारत विकास परिषद की पर्यावरण गतिविधि द्वारा विश्व वन्यजीवन दिवस के अवसर पर दिल्ली के केंद्रीय कार्यालय में एक भव्य एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य वन्यजीव संरक्षण, जैव-विविधता के महत्व तथा सतत विकास की दिशा में समाज को प्रेरित करना था ।कार्यक्रम में शिक्षाविद्, पर्यावरणविद्, छात्र एवं समाजसेवी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में सुरेश जैन राष्ट्रीय संगठन मंत्री, भारत विकास परिषद की उपस्थिति रही ।अपने उद्बोधन में उन्होंने वन्यजीव संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रकृति की रक्षा करना मानव का नैतिक दायित्व है।

उन्होंने उपस्थित जनों को भारत विकास परिषद की पाँचों प्रमुख गतिविधियों से अवगत कराया तथा विस्तार से बताया कि परिषद किस प्रकार शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार, सेवा एवं समर्पण के माध्यम से समाज के गरीब एवं वंचित वर्गों की सहायता करती है ।उन्होंने कहा कि परिषद का उद्देश्य केवल पर्यावरण संरक्षण ही नहीं, बल्कि समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सेवा पहुँचाना है।

मुख्य वक्ता प्रो. राधेश्याम शर्मा, विभागाध्यक्ष, पर्यावरण अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने प्रेरणादायक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने व्यक्तिगत एवं सामुदायिक स्तर पर छोटे-छोटे प्रयासों द्वारा सतत विकास की दिशा में योगदान देने पर बल दिया ।उन्होंने ₹Nature is First and Human is Second"के सिद्धांत को अपनाने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित किए बिना स्थायी विकास संभव नहीं है। साथ ही, युवाओं को इकोलॉजिकल एंटरप्रेन्योरशिप के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान को नवाचार से जोड़ने का आह्वान किया ।विशिष्ट वक्ता डॉ. गौरव बरहोडिया सहायक प्रोफेसर, रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय ने साँपों पर वैज्ञानिक प्रस्तुति दी ।उन्होंने बताया कि भारत में लगभग 350 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से केवल लगभग 10 प्रतिशत ही विषैली होती हैं। उन्होंने कहा कि अधिकांश साँप पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कार्यक्रम में प्रो. निरंजन, डीन प्लानिंग दिल्ली विश्वविद्यालय तथा डॉ. जे. आर. भट्ट, राष्ट्रीय संयोजक, पर्यावरण गतिविधि ने भी अपने विचार व्यक्त किए और वन्यजीव संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में राकेश शर्मा, अरिहंत जैन, राजकुमार बग्गा, की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय के अनेक प्रोफेसर और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे ।सभी ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

अंत में प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया। जिसमें उपस्थित जनों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम का समापन वन्यजीव संरक्षण एवं पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

समाचार पत्र विक्रेताओं ने गुलाल एवं मिठाई देकर होली का पर्व मनाया

सभी साथियों को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दी - विकास खत्री

समाचार पत्र विक्रेता समिति गोवर्धन चौराहा मथुरा द्वारा होली मिलन समारोह अशोका सिटी सेंटर पर मनाया गया इसमें सबसे पहले राधाकृष्ण की छवि के आगे दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया सभी साथी गणों ने राधा कृष्ण की छवि पर गुलाल लगाकर एक दूसरे को गुलाल लगाते हुए होली की शुभकामनाएं दीं और सभी साथी गणों ने होली के भजनों पर नृत्य किया कार्यक्रम का संचालन अंकित शर्मा ने किया और सभी को गुलाल के पेकेट वितरण किया गया मीडिया प्रभारी विकास खत्री ने बताया कि होली का त्योहार आपसी भाईचारे को बढ़ावा देता है और सभी को सभी त्योहार मिल-जुलकर मनाना चाहिए सभी साथियों को मिठाई एवं गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं देते हुए आगे सभी साथी होली के भजनों पर खूब आनंद उठाया इस दौरान सतीश कुमार, विकास खत्री, अंकित शर्मा, ललित आडवाणी, मनीष सैनी, अवनीश कुमार, किशन सिंह, संजय महार, परमानंद, श्यामू, मोनू, प्रकाश सिंह, निखिल कुमार, एवं अन्य साथीगण उपस्थित रहे।

मध्य प्रदेश एलएसए में नेटवर्क गुणवत्ता का आकलन: गुना, अशोकनगर और गुना–भोपाल राजमार्ग पर ट्राई की जांच

संगिनी घोष

मध्य प्रदेश एलएसए के अंतर्गत ड्राइव टेस्ट

भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (ट्राई) ने मध्य प्रदेश लाइसेंस्ड सर्विस एरिया (LSA) के अंतर्गत गुना और अशोकनगर शहरों तथा आसपास के क्षेत्रों में मोबाइल सेवा प्रदाताओं की नेटवर्क गुणवत्ता का आकलन किया। इसके साथ ही गुना–भोपाल राजमार्ग पर भी ड्राइव टेस्ट आयोजित किया गया।

इस परीक्षण का उद्देश्य कॉल कनेक्टिविटी, कॉल ड्रॉप, वॉयस क्वालिटी और मोबाइल डेटा प्रदर्शन जैसे प्रमुख मानकों की जांच करना था।

ऐसे देखें तो, यह पहल दूरसंचार सेवाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने और उपभोक्ता हितों की रक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

उपभोक्ता अनुभव पर जोर

ड्राइव टेस्ट के माध्यम से वास्तविक परिस्थितियों में सेवा की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जाता है। शहरों के साथ-साथ राजमार्ग क्षेत्रों को शामिल कर ट्राई ने गतिशील स्थिति में नेटवर्क की स्थिरता का आकलन किया।

अधिकारियों के अनुसार, इस तरह के परीक्षण नेटवर्क कवरेज की कमियों की पहचान करने में सहायक होते हैं।

राजमार्ग पर कनेक्टिविटी का महत्व

राजमार्गों पर विश्वसनीय मोबाइल नेटवर्क सुरक्षा, आपातकालीन संपर्क और डिजिटल सेवाओं के लिए अत्यंत आवश्यक है। गुना–भोपाल मार्ग पर विशेष ध्यान देते हुए निर्बाध कनेक्टिविटी का मूल्यांकन किया गया।

यह पहल क्यों अहम है?

आज के डिजिटल युग में दूरसंचार सेवाएं संचार, वित्तीय लेनदेन और आपातकालीन सेवाओं की आधारशिला हैं। नियमित निगरानी सेवा प्रदाताओं की जवाबदेही सुनिश्चित करती है और उपभोक्ता विश्वास को मजबूत करती है।

ऐसे देखें तो, यह ड्राइव टेस्ट डिजिटल अवसंरचना को सुदृढ़ करने और सेवा गुणवत्ता में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है।

मुख्य बिंदु

* ट्राई ने गुना और अशोकनगर में नेटवर्क गुणवत्ता का आकलन किया।
* मध्य प्रदेश एलएसए के अंतर्गत ड्राइव टेस्ट आयोजित।
* गुना–भोपाल राजमार्ग पर भी परीक्षण।
* कॉल, वॉयस और डेटा प्रदर्शन की जांच।
* उपभोक्ता अनुभव सुधार पर फोकस।
* दूरसंचार सेवा मानकों को सुदृढ़ करने की पहल।

आगे की दिशा

विशेषज्ञों का मानना है कि नियमित निरीक्षण और सुधारात्मक कदमों से दूरसंचार सेवाओं की गुणवत्ता में स्थायी सुधार संभव है। सेवा प्रदाताओं की समयबद्ध कार्रवाई भविष्य में बेहतर नेटवर्क अनुभव सुनिश्चित करेगी।

4 मार्च | जन्मदिन विशेष : कहने में कम, करने में आगे: रणबीर सिंह गंगवा

(जो गांव से चला, गांव के लिए जिया — जनता का नेता, ज़मीन से जुड़ा व्यक्तित्व, गांव, किसान और गरीब की सच्ची आवाज़)

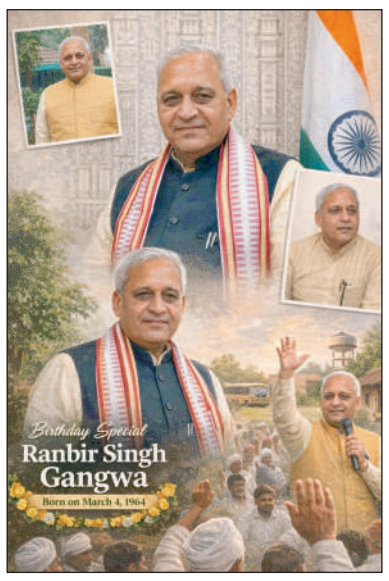

(रणबीर सिंह गंगवा हरियाणा की राजनीति में एक ऐसे नेता हैं, जिनकी पहचान शोर से नहीं, काम से बनी है। गांव की मिट्टी से उठकर उन्होंने जनसेवा को अपना मूल मंत्र बनाया। जिला परिषद से लेकर कैबिनेट मंत्री तक का उनका सफर निरंतर संघर्ष, संगठनात्मक निष्ठा और जनविश्वास की कहानी है। लोक निर्माण विभाग और सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के मंत्री के रूप में उनका फोकस साफ है—बेहतर सड़कें, स्वच्छ पेयजल और पारदर्शी व्यवस्था। वे मानते हैं कि मजबूत गांव ही मजबूत हरियाणा की नींव हैं। इसी सोच के साथ वे सड़कों के विस्तार, जलापूर्ति और ग्रामीण बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता दे रहे हैं। सादगी, स्वच्छ छवि और जमीनी जुड़ाव उनकी सबसे बड़ी ताकत है। पिछड़े वर्गों, किसानों और गरीबों की आवाज़ बनकर रणबीर गंगवा ने साबित किया है कि राजनीति अगर ईमानदारी और सेवा भाव से की जाए, तो बदलाव ज़मीनी स्तर पर दिखता है।)

— डॉ. प्रियंका सौरभ

रणबीर सिंह गंगवा हरियाणा की राजनीति में उन चुनिंदा नेताओं में गिने जाते हैं, जिन्होंने ग्रामीण पृष्ठभूमि से उठकर निरंतर संघर्ष, संगठनात्मक निष्ठा और जनसेवा के बल पर कैबिनेट मंत्री तक का सफर तय किया। वे आज हरियाणा सरकार में लोक निर्माण विभाग (PWD) तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के कैबिनेट मंत्री हैं और नायब सिंह सैनी मंत्रिमंडल में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उनका जीवन पिछड़े वर्गों, किसानों और ग्रामीण समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

रणबीर सिंह गंगवा का जन्म 4 मार्च 1964 को हरियाणा के हिसार जिले के गंगवा गांव में कुम्हार (प्रजापति) परिवार में हुआ। उनके पिता राजाराम और माता केसर देवी साधारण ग्रामीण जीवन से जुड़े थे। सीमित संसाधनों के बीच पले-बढ़े गंगवा ने उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की और प्रारंभ से ही सामाजिक कार्यों में रुचि दिखाई। ग्रामीण परिवेश में रहते हुए उन्होंने किसानों, मजदूरों और पिछड़े वर्गों की समस्याओं को नज़दीक से समझा, जिसने आगे चलकर उनकी राजनीति की दिशा तय की।

उनका पहला औपचारिक चुनाव जिला परिषद का था। वर्ष 2000 में उन्होंने हिसार जिला परिषद का चुनाव लड़ा, जहां उन्हें प्रारंभिक पराजय का सामना करना पड़ा। लेकिन इस हार ने उन्हें और मजबूत बनाया। 2005 में वे दोबारा चुनाव जीतकर जिला परिषद सदस्य बने और बाद में उपाध्यक्ष पद तक पहुंचे। इस दौरान उन्होंने ग्रामीण सड़कों, पेयजल, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। यही कालखंड उनके राजनीतिक जीवन की मजबूत नींव बना।

2009 में उन्होंने नलवा विधानसभा क्षेत्र से इंडियन नेशनल लोकदल के टिकट पर चुनाव लड़ा। इस चुनाव में उन्हें कांग्रेस के वरिष्ठ नेता संपत सिंह से हार का सामना करना पड़ा, किंतु उनका राजनीतिक प्रभाव बना रहा। 2010 में उन्हें इंडियन नेशनल लोकदल की ओर से राज्यसभा भेजा गया। राज्यसभा सदस्य के रूप में उन्होंने हरियाणा के ग्रामीण और पिछड़े वर्गों से जुड़े मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया और अपनी सक्रियता से पहचान बनाई।

2014 में वे नलवा विधानसभा क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए। इस चुनाव में उन्होंने संपत सिंह और पूर्व उपमुख्यमंत्री चंद्रमोहन जैसे दिग्गज नेताओं को पराजित किया। विधायक के रूप में उन्होंने क्षेत्र में विकास कार्यों को गति दी और जनता से निरंतर संवाद बनाए रखा।

2019 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी का दामन थामा और नलवा से पुनः जीत दर्ज की। विधानसभा में उन्हें उपाध्यक्ष (डिप्टी स्पीकर) की जिम्मेदारी सौंपी गई, जहां उन्होंने सदन की कार्यवाही को सुचारू और मर्यादित ढंग से संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2024 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने उन्हें बरवाला विधानसभा क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया। यह राजनीतिक रूप से एक नई चुनौती थी, लेकिन रणबीर गंगवा ने इसे अवसर में बदल दिया। उन्होंने बरवाला से ऐतिहासिक जीत दर्ज कर पहली बार वहां भाजपा को विजय दिलाई। इसी जीत के बाद उन्हें नायब सैनी मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री के रूप में शामिल किया गया। लगभग 34 वर्षों के राजनीतिक संघर्ष का यह महत्वपूर्ण पड़ाव था।

कैबिनेट मंत्री बनने के बाद रणबीर गंगवा को लोक निर्माण विभाग (PWD) और सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका उद्देश्य विभाग को पारदर्शी और जवाबदेह बनाना है। हरियाणा में लगभग 30,664 किलोमीटर लंबी सड़कों का नेटवर्क पीडब्ल्यूडी के अंतर्गत आता है। वर्ष 2025–26 के लिए 6,500 किलोमीटर सड़कों की नई कार्पेटिंग का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। गुणवत्ता सुनिश्चित करने और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए सख्त निगरानी प्रणाली लागू की गई है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के तहत उनका फोकस ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति, पाइपलाइन विस्तार और जल संरक्षण योजनाओं पर है। हरियाणा स्वर्ण जयंती महाग्राम योजना के माध्यम से गांवों में बुनियादी सुविधाओं को सुदृढ़ किया जा रहा है। उनका मानना है कि मजबूत गांव ही मजबूत हरियाणा की नींव हैं।

रणबीर गंगवा को पिछड़े वर्गों का सशक्त प्रतिनिधि माना जाता है। प्रजापति समाज में उनकी विशेष पकड़ है और वे ओबीसी समुदाय की आवाज़ उठाने के लिए जाने जाते हैं। उनकी सादगी और सहजता उन्हें आम जनता के बीच लोकप्रिय बनाती है।

उनकी राजनीति की एक बड़ी विशेषता उनकी स्वच्छ छवि है। 34 वर्षों के सार्वजनिक जीवन में उनके खिलाफ कोई आपराधिक मामला दर्ज नहीं है। उनकी घोषित संपत्ति और देनदारियां चुनावी हलफनामों में पारदर्शी रूप से दर्ज हैं, जो उनकी ईमानदारी और जवाबदेही को दर्शाती हैं।

रणबीर सिंह गंगवा का जीवन यह संदेश देता है कि निरंतर परिश्रम, जमीनी जुड़ाव और जनसेवा के प्रति समर्पण से व्यक्ति ऊंचाइयों तक पहुंच सकता है। जिला परिषद से लेकर कैबिनेट मंत्री तक का उनका सफर संघर्ष और दृढ़ इच्छाशक्ति की प्रेरक कहानी है। आज वे हरियाणा की राजनीति में एक सक्रिय, जमीनी और विकासोन्मुखी नेता के रूप में स्थापित हो चुके हैं और उनके नेतृत्व में प्रदेश का बुनियादी ढांचा नई दिशा में आगे बढ़ रहा है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान),

विद्या–प्रेम संस्कृति न्यास का वार्षिक समारोह सम्पन्न

साहित्य साधकों का हुआ सम्मान

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली, 3 मार्च। साहित्य एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन के उद्देश्य से सक्रिय विद्या–प्रेम संस्कृति न्यास का वार्षिक सम्मान समारोह नोएडा स्थित 'प्रतिबिंब' में गरिमापूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

समारोह में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिनाम साहित्यकार एवं राष्ट्रीयवादी विचारक डॉ. सविता चड्ढा का विशेष सानिध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैश्विक हिंदी परिवार के मानद निदेशक विनय शील चतुर्वेदी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में हिंदुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष सुधाकर पाठक उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर अंतरराष्ट्रीय लेखक–पत्रकार डॉ. शंभु पंवार, 'ट्रू मीडिया' के संपादक ओमप्रकाश प्रजापति, साहित्यकार विनय विक्रम सिंह, डॉ. सैयद अख्तर नकवी तथा कुमार सुबोध शामिल रहे। निर्णायक कीभूमिका डॉ. पुष्पा सिंह बिसेन ने निभाई। संचालन परिणीता सिन्हा 'स्वयंसिद्धा' द्वारा किया गया ।न्यास के संरक्षक डॉ. आर. के. सिंह एवं अध्यक्ष डॉ. कल्पना पाण्डेय ने अतिथियों का शॉल, माला एवं स्मृति-चिन्ह भेंट कर स्वागत किया।

अतिथियों ने अपने संबोधन में कहा कि न्यास द्वारा विगत पाँच वर्षों से माता-पिता के नाम पर आयोजित सम्मान समारोह भारतीय संस्कारों की पुनर्स्थापना का सशक्त अभियान है। उन्होंने डॉ. कल्पना पाण्डेय की पहल की सराहना करते हुए कहा कि जो संतान अपने माता-पिता के आदर्शों और विचारों को समाजहित में आगे बढ़ाती है, वह समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत बनती है।

डॉ. पाण्डेय ने बताया कि न्यास की स्थापना वर्ष 2020 में अपने पिता की स्मृति में की गई थी। इसी क्रम में 'प्रेम–रत्न सम्मान' अतुल प्रभाकर (संस्थापक एवं अध्यक्ष, गांधी शांति प्रतिष्ठान सम्मान समारोह समिति) को 5101 रुपये की सम्मान राशि सहित प्रदान किया गया। 'विद्या–श्री सम्मान' लिटिल बर्ड प्रकाशन की अध्यक्ष एवं साहित्यकार कुसुमलता सिंह को 2101 रुपये की राशि सहित प्रदान किया गया। तथा 'सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार' श्रेणी में विभिन्न विधाओं के रचनाकारों को उनकी श्रेष्ठ कृतियों के लिए सम्मानित किया गया। नाटक विधा में 'स्वच्छ भारत' कृति के लिए डॉ. सूक्ष्मलता महाजन, बाल साहित्य हेतु डॉ. शील कौशिक एवं निशा भार्गव, '21 लोकप्रिय पहेलियां' के लिए डॉ. घमंडी लाल अग्रवाल, तथा किशोर साहित्य में योगदान हेतु ब्रह्मदेव शर्मा को अलंकृत किया गया।

नवाचार श्रेणी में दादी- पोती की रचनात्मक प्रस्तुति के लिए डॉ. अंजू क्वात्रा एवं प्रणेता क्वात्रा को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार सविता स्याल, आशमा कौल, डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत', डॉ. कविता मल्होत्रा, डॉ. उपासना दीक्षित, डॉ. कविता सिंह प्रभा, शारदा मित्तल, शन्नो श्रीवास्तव, स्मिता श्रीवास्तव, संजय शर्मा, अभिलाषा, लता, डॉ. मानिक शर्मा, निरंजना एवं प्रांजल संजना की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम के संयोजन में रोहित राकेश, काव्या दूबे 'प्रेम' एवं सौरभ की सराहनीय भूमिका रही।

डॉ. शंभु पंवार को जन्मदिन की दी शुभकामनाएं

समारोह के दौरान विशिष्ट अतिथि डॉ. शंभु पंवार का जन्मदिवस के शुभ अवसर पर न्यास की अध्यक्ष एवं उपस्थित साहित्यकारों ने पुष्पहार पहनाकर एवं मिठाई खिलाकर शुभकामनाएं दी गईं।अंत में न्यास के संरक्षक डॉ. आर. के. सिंह ने सभी अतिथियों एवं सहभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

"जिन्दगी अनमोल है" अपनी क़ीमत पहचानें"

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

यह सच है कि ज़िन्दगी एक ऐसा नायब तोहफ़ा है जिसकी कोई क़ीमत नहीं लगाई जा सकती। यह अल्फ़ाज़ हमें एक गहरी सोच की दावत देते हैं कि हम अपनी ज़ात को दूसरों के रहम व करम पर न छोड़ें। अपनी ज़ात की अहमियत (आप न हों तो कुछ भी नहीं) ₹ख़ुद को मुरझाने मत देंऱ। जिस तरह एक फूल अगर मुरझा जाए तो अपनी ख़ूबसूरती खो देता है, बल्कुल उसी तरह अगर इंसान ज़ेहनी या ज़ज़्बाती तौर पर हिम्मत हार जाए तो वह जिए जी मर जाता है। याद रखें, आपकी दुनिया का केंद्र आप ख़ुद हैं। अगर आप तंदुरुस्त और ख़ुश हैं, तभी आप अपने प्यारों और समाज के काम आ सकते हैं। ज़िन्दगी कोई हादसा नहीं ₹यह ज़िन्दगी कोई इतनी फ़ालतू थोड़ी है जिसे आप किसी भी वाक़ए के सुपुर्द कर देंगेऱ। ज़िन्दगी में उतार चढ़ाव आते रहते हैं। कभी नाकामी होती है तो कभी दिल टूटता है, लेकिन किसी एक वाक़ए या तल्ख़ याद की ख़ातिर पूरी ज़िन्दगी को बर्बाद कर लेना दानिशमंदी नहीं है। ज़िन्दगी इतनी सस्ती नहीं कि उसे दुखों की नज़र कर दिया जाए। इज़हार सोच का जादू ₹आप ख़ुश रहेंगे तो यह दुनिया भी आपके साथ मुस्कुराएगीऱ। यह कायनात एक आईने की तरह है। आप जो कुछ अंदर महसूस करते हैं, वही आपको बाहर नज़र आता है। जब आप मुस्कुराते हैं और मुसबत सोचते हैं, तो आपकी ताक़त दूसरों को भी मुतासिर करती है और हालात ख़ुद ब ख़ुद साज़गार होने लगते हैं। ख़ुद को मुतहरिक और पुरसकून रखें। एक्टिव रहना, सुस्ती को छोड़कर ज़िन्दगी के कामों में हिस्सा लेना। भरोसा,, अपनी सलाहियतों पर भरोसा रखना। सुकून,, अफ़रातफ़री के दौर में अपने दिल को मुतमइन रखना। ₹अपना साथ कभी न छोड़ें क्योंकि आपको आपकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत हैऱ। लोग आएंगे और चले जाएंगे, लेकिन आपकी अपनी ज़ात हमेशा आपके साथ रहेगी। जब इंसान ख़ुद अपना बेहतरीन दोस्त बन जाता है, तो वह दुनिया की किसी भी मुश्किल का सामना कर सकता है।यह तहरीर हमें सिखाती है कि अपनी क़ीमत करना सीखें। दुनिया आपकी क़ीमत तभी करेगी जब आप ख़ुद अपनी अहमियत को पहचानेंगे। अपनी ख़ुशी की चाबी किसी दूसरे के हाथ में न दें, बल्कि ख़ुद अपनी ज़िन्दगी के मालिक और मजबूत सुतुन बनें।

होली, बदलता समाज और मर्यादा की नई परिभाषाएँ

● डॉ. सत्यवान सौरभ

परंपरागत रूप से होली को पारिवारिक और सामुदायिक दायरे में मनाया जाता रहा है। गाँवों में चौपाल, मोहल्लों में आँगन, घरों की छतें—ये सब उत्सव के स्वाभाविक मंच होते थे। रिश्तों की परिभाषाएँ स्पष्ट थीं; देवर-भाभी की हँसी-ठिठोली, ननद-भाभी की चुहल, मित्रों का रंग-अबीर....

होली केवल एक त्योहार नहीं, भारतीय समाज की सामूहिक चेतना का उत्सव है। यह रंगों का, उल्लास का, मन की गांठें खोलने का और रिश्तों में जमी धूल झाड़ने का अवसर है। किंतु समय के साथ हर परंपरा नए प्रश्नों के घेरे में आती है। आज जब विश्वविद्यालयों और सार्वजनिक स्थलों पर होली के आयोजन का स्वरूप बदल रहा है, तब समाज का एक वर्ग उत्साहित है तो दूसरा वर्ग चिंतित। यही द्वंद्व इस चर्चा को गंभीर बनाता है।

परंपरागत रूप से होली को पारिवारिक और सामुदायिक दायरे में मनाया जाता रहा है। गाँवों में चौपाल, मोहल्लों में आँगन, घरों की छतें—ये सब उत्सव के स्वाभाविक मंच होते थे। रिश्तों की परिभाषाएँ स्पष्ट थीं; देवर-भाभी की हँसी-ठिठोली, ननद-भाभी की चुहल, मित्रों का रंग-अबीर। इन सबमें एक सांस्कृतिक मर्यादा और सामाजिक संदर्भ निहित रहता था। त्योहार का आनंद सामूहिक था, पर सीमाएँ भी स्पष्ट थीं।

आज दृश्य बदल चुका है। सहशिक्षा वाले विश्वविद्यालयों में छात्र-छात्राएँ साथ पढ़ते हैं, साथ कार्यक्रम आयोजित करते हैं और साथ ही उत्सव भी मनाते हैं। सोशल मीडिया के दौर में उत्सव केवल निजी अनुभव नहीं रह गया, वह सार्वजनिक प्रदर्शन का रूप ले लेता है। रंग, संगीत, नृत्य और भीड़—ये सब मिलकर एक ऐसा माहौल रचते हैं जो पारंपरिक होली से भिन्न दिखाई देता है। यही बदलाव समाज के एक हिस्से को असहज करता है।

मुख्य प्रश्न यह नहीं है कि लड़कियाँ होली क्यों खेल रही हैं या लड़के क्यों साथ हैं। असली प्रश्न यह है कि क्या उत्सव की आड़ में मर्यादा और गरिमा सुरक्षित है? क्या स्वतंत्रता के नाम पर अराजकता को स्थान मिल रहा है? क्या भीड़ के उत्साह में व्यक्तिगत सीमाएँ टूट रही हैं?

यहाँ "लड़की" और "स्त्री" के बीच का अंतर भी चर्चा में आता है। समाज अक्सर बेटियों को बचपन से ही मर्यादा का पाठ पढ़ाता है, जबकि बेटों को अधिक खुली छूट मिलती रही है। जब बेटियाँ सार्वजनिक रूप से उत्सव में भाग लेती हैं, तो उसे परंपरा से विचलन मान लिया जाता है। पर क्या यह दृष्टिकोण न्यायसंगत है? यदि शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में समान अवसर स्वीकार हैं, तो सांस्कृतिक आयोजनों में समान भागीदारी क्यों नहीं?

दूसरी ओर, यह भी उतना ही सत्य है कि भीड़ का व्यवहार हमेशा संयमित नहीं होता। होली के अवसर पर छेड़छाड़, जबरदस्ती रंग लगाने, अभद्र टिप्पणियों जैसी घटनाएँ वर्षों से समाज की चिंता का विषय रही हैं। ऐसे में अभिभावकों की आशंका को पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता। उनकी चिंता केवल परंपरा की रक्षा की नहीं, बल्कि बेटियों की सुरक्षा और गरिमा की भी होती है।

यहाँ "सहमति" की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। आधुनिक समाज में किसी भी सामाजिक संपर्क का आधार स्पष्ट सहमति है। यदि कोई छात्रा या छात्र अपनी इच्छा से, सुरक्षित वातावरण में उत्सव का हिस्सा बनता है, तो उसे केवल इसलिए गलत नहीं ठहराया जा सकता कि वह परंपरागत ढाँचे से अलग है। लेकिन यदि आयोजन में सुरक्षा, निगरानी और स्पष्ट आचार-संहिता का अभाव है, तो चिंता स्वाभाविक है।

विश्वविद्यालय प्रशासन की भूमिका यहाँ निर्णायक हो जाती है। किसी भी सामूहिक आयोजन में सुरक्षा व्यवस्था, शिकायत तंत्र और स्पष्ट दिशा-निर्देश अनिवार्य होने चाहिए। यह सुनिश्चित करना प्रशासन का दायित्व है कि कोई भी छात्र या छात्रा असहज महसूस न करे। "नो मींस नो" जैसी स्पष्ट नीति और उसकी सख्ती से पालना उत्सव को स्वस्थ बनाए रख सकती है।

समाज को भी आत्ममंथन की आवश्यकता है। क्या हम बेटियों को केवल घर की मर्यादा से जोड़कर देखते हैं? क्या हम यह मान बैठे हैं कि सार्वजनिक स्थानों पर उनका सक्रिय होना स्वभावतः अनुचित है? यदि बेटियाँ शिक्षा, खेल, राजनीति और व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, तो सांस्कृतिक आयोजनों में उनकी उपस्थिति को अलग कसौटी पर क्यों परखा जाए?

परंपरा स्थिर नहीं होती; वह समय के साथ बदलती है। जो आज "नया" प्रतीत हो रहा है, वह कल सामान्य बन सकता है। किंतु परिवर्तन का अर्थ मूल्यों का परित्याग नहीं है। मर्यादा, सम्मान और सुरक्षा—ये मूल्य शाश्वत हैं। प्रश्न यह है कि क्या हम इन मूल्यों को नए परिवेश में लागू करने के लिए तैयार हैं?

होली का मूल संदेश सामाजिक भेद मिटाना है। यह वह दिन है जब रंग सबको एक कर देते हैं—जाति, वर्ग, आयु, लिंग के भेद पीछे छूट जाते हैं। यदि हम इस मूल भावना को स्वीकार करते हैं, तो हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि बेटियाँ और बेटे दोनों समान रूप से इस उत्सव का हिस्सा हैं।

फिर भी, उत्सव को प्रदर्शन में बदल देना चिंता का विषय है। सोशल मीडिया पर लाइक और व्यूज़ की दौड़ में निजी क्षणों का सार्वजनिक प्रदर्शन कई बार गरिमा की सीमा लांघ देता है। युवाओं को यह समझने की आवश्यकता है कि आत्मविश्वास और आत्मप्रदर्शन में अंतर होता है। आनंद का अर्थ यह नहीं कि हर क्षण कैमरे के लिए जिया जाए।

अभिभावकों की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। केवल रोक-टोक समाधान नहीं है। संवाद, विश्वास और जागरूकता अधिक प्रभावी साधन हैं। यदि बेटियों को बचपन से ही आत्मसम्मान, आत्मरक्षा और स्पष्ट सीमाएँ तय करने का संस्कार दिया जाए, तो वे किसी भी वातावरण में स्वयं की गरिमा की रक्षा कर सकती हैं। उसी प्रकार बेटों को भी यह सिखाया जाना चाहिए कि उत्सव का आनंद दूसरों की असुविधा पर आधारित नहीं हो सकता।

समाज को यह स्वीकार करना होगा कि नई पीढ़ी अलग सामाजिक संरचना में जी रही है। सहशिक्षा, डिजिटल मीडिया और वैश्विक प्रभावों ने उनके अनुभवों को व्यापक बना दिया है। ऐसे में पुरानी परिभाषाओं को ज्यों-का-त्यों लागू करना संभव नहीं। परंतु यह भी उतना ही आवश्यक है कि नई पीढ़ी परंपरा की जड़ों से जुड़ी रहे।

संतुलन ही समाधान है। न अंधानुकरण, न अंधविरोध। यदि विश्वविद्यालयों में होली का आयोजन होता है, तो उसे सुरक्षित, गरिमापूर्ण और स्वैच्छिक बनाया जाए। यदि कोई छात्र या छात्रा भाग नहीं लेना चाहता, तो उस पर दबाव न डाला जाए। यदि कोई भाग लेना चाहता है, तो उसकी स्वतंत्रता का सम्मान किया जाए।

अंततः प्रश्न केवल होली का नहीं, बल्कि समाज की मानसिकता का है। क्या हम स्वतंत्रता को संदेह की दृष्टि से देखेंगे, या उसे जिम्मेदारी के साथ स्वीकार करेंगे? क्या हम बेटियों को केवल संरक्षण की वस्तु मानेंगे, या उन्हें सक्षम और सजग नागरिक के रूप में देखेंगे?

होली का रंग तभी स्थायी होगा जब उसमें विश्वास और सम्मान की खुशबू हो। परंपरा और आधुनिकता का संघर्ष तब समाप्त होगा जब हम समझेंगे कि दोनों का उद्देश्य समाज को बेहतर बनाना है।

त्योहारों का अर्थ केवल रस्में निभाना नहीं, बल्कि समय के साथ स्वयं को परखना भी है। यदि हम मर्यादा, गरिमा और सहमति को केंद्र में रखकर उत्सव मनाएँ, तो न तो परंपरा आहत होगी और न आधुनिकता।

होली के रंगों में घुलता बंधुता का संदेश: जाति-धर्म से परे संवैधानिक मूल्यों का संकल्प

बाबूलाल नागा

फाल्गुन का महीना आते ही हवा में एक अलग-सी उमंग घुलने लगती है। खेतों में पकती फसल, गांवों की चौपालों पर गूंजते फाग और शहरों की गलियों में सजती रंग-गुलाल की दुकानें—सब मिलकर संकेत देते हैं कि होली का पर्व आ गया है। परंतु होली केवल रंगों और उल्लास का उत्सव नहीं है, यह समाज को आत्ममंथन का अवसर भी देता है। यह वह क्षण है जब हम अपने भीतर और अपने आसपास फैली दूरियों को पहचानकर उन्हें मिटाने का संकल्प ले सकते हैं।

भारत की आत्मा उसकी विविधता में बसती है। यहां अनेक धर्म, भाषाएं, संस्कृतियां और परंपराएं साथ-साथ सांस लेती हैं। लेकिन यह भी एक सच्चाई है कि समय-समय पर जाति, धर्म और संकीर्ण पहचान के आधार पर समाज में दरारें उभरती रही हैं। ऐसे में होली का त्योहार हमें याद दिलाता है कि रंगों की तरह ही हमारी पहचानें भी अलग-अलग हो सकती हैं, परंतु उनका उद्देश्य एक सुंदर और समरस चित्र बनाना है।

हमारे संविधान की प्रस्तावना में "न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता" का जो संकल्प दर्ज है, वह केवल शब्दों का अलंकार नहीं बल्कि भारतीय लोकतंत्र की आत्मा है। बंधुता का अर्थ है—एक-दूसरे को अपना मानना, सम्मान देना और साझा भविष्य की कल्पना करना। यदि समाज में भाईचारा कमजोर होगा, तो समानता और न्याय भी अधूरे रह जाएंगे। इसलिए होली का पर्व हमें संवैधानिक मूल्यों को जीवन में उतारने का अवसर देता है।

आज के दौर में जब सामाजिक और राजनीतिक विमर्श कई बार विभाजनकारी रेखाएं खींचता दिखाई देता है, तब होली का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। यह पर्व कहता है कि मतभेद स्वाभाविक हैं, पर मनभेद घातक। लोकतंत्र में विचारों की विविधता शक्ति है, कमजोरी नहीं। परंतु जब विचारों का अंतर वैमनस्य में बदल जाता है, तब समाज का ताना-बाना कमजोर होने लगता है। ऐसे समय में रंगों का यह उत्सव हमें संवाद, सहिष्णुता और सहभागिता का मार्ग दिखाता है।

ग्रामीण भारत में होली अक्सर सामाजिक मेल-मिलाप का माध्यम बनती है। चौपाल पर बैठकर गाए जाने वाले फाग केवल गीत नहीं होते, वे सामूहिकता की धुन होते हैं। शहरों में भी मोहल्लों और कॉलोनियों में लोग एक-दूसरे के घर जाकर रंग लगाते हैं। यह परंपरा हमें सिखाती है कि पड़ोसी केवल भौगोलिक निकटता नहीं, बल्कि सामाजिक रिश्ते का नाम है। यदि हम इस भावना को वर्षभर बनाए रखें, तो समाज में अविश्वास की जगह विश्वास पनप सकता है।

हालांकि यह भी आवश्यक है कि हम होली के उत्सव को जिम्मेदारी और संवेदनशीलता के साथ मनाएं। किसी पर जबरन रंग डालना, अशालीन व्यवहार करना या किसी की धार्मिक-सांस्कृतिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना, होली की भावना के विपरीत है। बंधुता का अर्थ यह नहीं कि हम दूसरों की सहमति और गरिमा की अनदेखी करें। असली भाईचारा वही है जिसमें सम्मान और मर्यादा दोनों शामिल हों।

स्कूलों, कॉलेजों और सामाजिक संगठनों को भी इस अवसर का उपयोग संवैधानिक चेतना के प्रसार के लिए करना चाहिए। यदि होली के कार्यक्रमों में संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन हो, सामाजिक समानता पर चर्चा हो और जाति-धर्म से परे एकता का संदेश दिया जाए तो यह त्योहार नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बन सकता है। पंचायत और स्थानीय संस्थाएं "सद्भाव होली" जैसे आयोजनों के माध्यम से विभिन्न समुदायों को एक मंच पर ला सकती हैं।

आज जब डिजिटल युग में अफवाहें और भ्रामक सूचनाएं तेजी से फैलती हैं, तब सामाजिक सौहार्द बनाए रखना और भी चुनौतीपूर्ण हो गया है। ऐसे में हर नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह शांति और सद्भाव का दूत बने। होली के अवसर पर यदि हम यह संकल्प लें कि हम न तो घृणा फैलाएंगे और न ही किसी प्रकार के भेदभाव को बढ़ावा देंगे, तो यह पर्व अपने वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करेगा।

हमें यह समझना होगा कि संविधान केवल न्यायालयों और संसद तक सीमित दस्तावेज नहीं है। वह हमारे दैनिक जीवन का मार्गदर्शक है। जब हम किसी को उसकी जाति या धर्म से नहीं बल्कि उसकी मानवता से पहचानते हैं, तब हम वास्तव में संवैधानिक मूल्यों का पालन कर रहे होते हैं। होली हमें यही सीख देती है—रंग भले अलग हों पर मन एक होना चाहिए।

इस वर्ष होली को केवल परंपरा के निर्वहन तक सीमित न रखें। इसे सामाजिक परिवर्तन का अवसर बनाएं। अपने मोहल्ले, गांव या शहर में ऐसा वातावरण बनाएं, जहां हर व्यक्ति बिना भय और भेदभाव के उत्सव में भाग ले सके। आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि बंधुता और भाईचारे की भावना को जीवन के हर क्षेत्र में उतारेंगे, जाति और धर्म की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठेंगे और संविधान में निहित मूल्यों को अपने व्यवहार का हिस्सा बनाएंगे।

जब रंगों के साथ दिल भी मिलेंगे, तभी होली का वास्तविक अर्थ पूर्ण होगा। तभी यह पर्व केवल उत्सव नहीं, बल्कि एक मजबूत, समरस और संवैधानिक भारत की ओर बढ़ता हुआ कदम बनेगा।

बाबूलाल नागा

होली: हुड़दंग नहीं रंग पर्व

बदरंग हुए संस्कृति, प्रेम व मर्यादा के रंग

डॉ घनश्याम बादल

मेल-मिलाप और खुशी के रंगों से सराबोर करने की परम्परा का नाम है होली। सही मायनों में समझें तो होली केवल रंग बिखेरने या गुलाल लगा देने भर का त्यौहार नहीं वरन्-वह बैर के भाव को धो डालने वाला जश्न है। ऐसा जश्न जो ऊँच नीच बड़े-छोटे, अपने-पराए के अंतर को धो डालता है। यदिऐसे हम होली मनाते हैं तो वह अंग्रजी का 'होली' यानि पावन पर्व बन जाता वरना तो हो हुल्लड़ बनकर रह जाता है।

रंग,संस्कृति,प्रकृति और होली:

होली जैसे रंग, मस्ती और प्रेम के पर्व यूं ही नहीं बनाए गए थे हमारी संस्कृति में पर्व हमें अपनों और प्रकृति के समीप लाने का मौका देते थे। एक समय था जब होली के पर्व से करीब सवा महीने पहले वसंत पंचमी को होली का उपला रख दिया जाता था यानि प्रतीक रूप में खुशी भी अनायास नहीं क्रमागत आनी चाहिए। फिर गांव गलियों में मस्तों की टोलियां 'फगवा' 'कामण' या 'धमाल' गाते हुए घर घर जाती और होली का ईंधन इकट्ठा करती थी इसका भी एक सबब था सबका सहयोग लेना सबका योगदान पाना और इकट्ठे होकर मन के सारे पापों, गिले शिकवों को होली की आग में जला डालना होता था तब होली का मतलब। आज क्या है, सोचिए।

एक होली, अनेक रूप:

अलग प्रदेशों में अलग अलग ढंग से होली आधार की स्थापना की जाती है पश्चिमी उत्तरप्रदेश में पांच उपले रख कर तो राजस्थान के जयपुर, सीकर, चुरु व झुंझुनूं सहित शेखावाटी में एक मोटा डण्डा गाड़ कर प्रहलाद के रूप में होलिका का आधार रखा जाता है और फिर प्रतिदिन सवा महीने तक प्रतिदिन ईंधन जमा करके लोकगीत व नृत्य 'गींदड़' आयोजित किए जाते हैं. डांडिया रास से मिलता जुलता नृत्य और मुंह में दो अलगोजे लेकर जब वातावरण में मधुर स्वर लहरी गूंजती है तो पूरा वातावरण ही सरस हो उठता है। वैसे ऐसा भी नहीं है कि होली के नाम पर बस गंदगी ही गंदगी हो आज भी कुछ सांस्कृतिक रूप से समृद्ध इलाकों में वहां के लोग होलिका के पर्व की महत्ता को जानते हैं यही वजह है कि आज भी बृज की लठ्ठमार होली, बस्तर की पत्थरमार होली, हरियाणा की कोड़ामार होली, राजस्थान की गाढ़े गुलाबी रंग की 'गैर', मथुरा की राधाकृष्ण होली व पंजाब के होलामहला का रंग आज भी सर चढ़कर बोलता है और वातावरण में 'होली आई रे कन्हाई, रंग बरसे बजा दे बांसुरी ... जैसे सुमधुर गीत सुनाई देते हैं मगर फिर वही सवाल सांस्कृतिक होली घटती क्यों जा रही है।

गांवों की महकती होली:

उत्तर भारत के बहुत से गांवो में आज भी उल्लास के साथ न केवल होली-पूजन होता है वरन-वहां अब भी रात में होली के गीत की गूंजते हैं। होलिका को सूत की डोर से बांधकर हल्दी, बेर, बताशे आदि से पूजा जाता है और रात्रि में शुभ मुहुर्त में होलिका दहन किया जाता है। वहां आज भी माना जाता है कि होलिका के दहन करने से मनुष्य के सारे पाप उसकी अग्नि में जल जाते हैं। आज के ही दिन नए अनाज की प्रथम आहुति भी अग्निदेव को अर्पित करते हैं।

यह क्या हो गया ?:

एक निगाह डालिए अपने चारों तरफ क्या सच में हम सच में खुशी और प्रेम की होली मना रहे हैं ? क्या किसी भी तरह से हम मिथकों में वर्णित प्रहलाद रूपी भक्ति व आस्था को जला देने के लिए अपने वरदान का दुरूपयोग करने वाली होलिका का दहन मन से कर पा रहे हैं ? क्या आज पुराने बैर भाव को जलाने की बजाय होली बदला लेने या नशा करने का बहाना नहीं बनती जा रही है ?

बदरंग हो रही संस्कृति व मर्यादा:

क्या हम चाहते हैं कोई पड़ौसी या अजनबी हमारे घर होली पर आए ? हमारी बहनों, भाभियों या बहू बेटियों के साथ रंग खेले, उनके गालों पर गुलाल मले ? शायद नहीं। अब नहीं क्यों ? इसका जवाब भी हम जानते ही हैं। अगर होली को सच में 'होली भाव' यानि पावनता से से मनाने की मानसिकता हम विकसित करलें तो बहुत सी अनैतिकता की बीमारियां तो स्वयमेव ही जल जाएंगी। मगर सभ्यता, संस्कृति और सोच की मर्यादा गायब दिख रही है।

कहां गई वह होली ?:

सन- चालीस, पचास या साठ के दशक की होली की एक झलक याद करें तो वातावरण में मस्ती संस्कृति एवं प्रेम की महक महसूस करेंगे। फगवा के गीतों के नाम पर कितनी गालियां बरसती थी तब पर कोई बुरा नहीं मानता था क्योंकि तब ये प्रेमपगी गालियां मन के निर्मल गंगाजल से नहा कर आती थी। उनमें राग, द्वेष, ईर्ष्या या अपमान का भाव नहीं, वरन- अपनापन था। जराह खुद से ही पूछ कर देखिए आखिर कहां गई वह पावन होली?

जला डालें मनोविकार:

होली जहां एक और मनोविकारों के दहन का पर्व माना जाता है वहीं ओझा, तांत्रिक व टोने -टोटके वाले भी इस दिन अपना मायाजाल फैलाते हैं। इसलिए इस दिन अपने बच्चों का ख़ास ख़्याल रखना ज़रुरी है। बेहतर हो कि होली की अग्नि में पूर्वाग्रह, प्रतिशोध, बैर भाव सहित सारे मनोविकार जला डालें

मैले होते रंग:

खेद का विषय है कि अधिकांश क्षेत्रों में होलिका का पर्व हो-हुल्लड़, हुड़दंग, हिंसा या धींगामस्ती का पर्याय बन कर रह गया है। रंगों की जगह कैमिकल्स, गोबर कीचड़ व अन्य हानिकारक पदार्थों ने होली की गरिमा को लगातार कम किया है वहीं बढ़ती शराबखोरी, भांग व ड्रग्स का इस्तेमाल इस पावन पर्व को अपवित्र कर रहा है। होली के बहाने छेड़छाछ,व अश्लीलता पर रोक लगाने का प्रयास अगर नहीं किया गया तो होली का आनंद व पर्व दोनों ही संकट में पड़ जाएंगें।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html I tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

पिंकी कुंडू

"गोपनीयता कोई विशेषाधिकार नहीं—यह एक संवैधानिक अधिकार है। कोई भी प्लेटफ़ॉर्म, चाहे कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, सहमति को बाध्य नहीं कर सकता या डेटा संप्रभुता का दुरुपयोग नहीं कर सकता।"

पृष्ठभूमि

- 2021 में WhatsApp ने एक "ले लो या छोड़ दो" गोपनीयता नीति लागू की, जिसमें उपयोगकर्ताओं को Meta कंपनियों के साथ विस्तारित डेटा साझा करने को स्वीकार करना अनिवार्य था, अन्यथा सेवा बंद हो जाती।

- भारत के सुप्रीम कोर्ट ने इस दृष्टिकोण की निंदा की है और चेतावनी दी है कि WhatsApp/Meta भारतीयों के गोपनीयता अधिकारों से "खेल" नहीं सकते या संविधान का "मज़ाक" नहीं बना सकते।

- WhatsApp ने अपने हलफ़नामे में 2021 की नीति में संशोधन का सुझाव दिया है और CCI (Competition Commission of India) तथा NCLAT (National Company Law Appellate Tribunal) के निर्देशों का पालन करने का वादा किया है।

उठाए गए प्रमुख मुद्दे

1. बाध्यकारी सहमति

- उपयोगकर्ताओं के पास कोई opt-out विकल्प नहीं था; स्वीकार करना अनिवार्य था।

- यह स्वतंत्र और सूचित सहमति के सिद्धांत को कमजोर करता है।

2. डेटा संप्रभुता

- Meta कंपनियों के साथ मेटाडेटा साझा करने से भारतीय उपयोगकर्ताओं के व्यक्तिगत डेटा के शोषण की आशंका बढ़ती है।

- अदालत ने ज़ोर दिया कि मामले के निपटारे तक "एक भी जानकारी" साझा नहीं की जानी चाहिए।

3. एनक्रिप्शन बनाम मेटाडेटा

- WhatsApp अपने एंड-टू-एंड एनक्रिप्शन का बचाव करता है, यह दावा करते हुए कि वह व्यक्तिगत संदेश नहीं पढ़ सकता।

- विवाद का केंद्र मेटाडेटा का उपयोग है (आप किससे, कब और कितनी बार बात करते हैं), जिसे व्यावसायिक रूप से इस्तेमाल किया जा सकता है।

साइबर सुरक्षा निहितार्थ

- डिजिटल सहमति ढाँचे: भारतीय न्यायपालिका संकेत दे रही है कि सहमति स्वैच्छिक, सूक्ष्म और वापस ली जा सकने योग्य होनी चाहिए।

- प्लेटफ़ॉर्म जवाबदेही: OTT प्लेटफ़ॉर्म्स पर उपयोगकर्ता डेटा के प्रबंधन को लेकर कड़ी निगरानी होगी।

- नागरिक सशक्तिकरण: नागरिकों को यह तय करने का अधिक अधिकार मिलेगा कि कौन-सा डेटा साझा हो, और स्पष्ट opt-in/opt-out विकल्प होंगे।

- वैश्विक मिसाल: भारत का रुख अन्य देशों को प्रभावित कर सकता है और वैश्विक गोपनीयता मानकों को मज़बूत कर सकता है।

संभावित परिणाम

- नीति संशोधन: WhatsApp को अपनी गोपनीयता नीति में बदलाव करना पड़ेगा, जिसमें स्पष्ट सहमति सुरक्षा और opt-out विकल्प शामिल होंगे।

- नियामक निगरानी: DIP जैसे ढाँचे और CCI के निर्देश अनुपालन की सतत निगरानी सुनिश्चित करेंगे।

- न्यायिक मील का पत्थर: यह मामला मिसाल बनेगा कि संवैधानिक गोपनीयता अधिकार कॉर्पोरेट नीतियों से ऊपर हैं।

नागरिकों के लिए संदेश

- सतर्क रहें: अपडेट स्वीकार करने से पहले गोपनीयता नीतियाँ ध्यान से पढ़ें।

- अधिकारों का प्रयोग करें: यदि दुरुपयोग का संदेह हो तो चक्षु, NCRP जैसे रिपोर्टिंग तंत्र का उपयोग करें।

- पारदर्शिता की माँग करें: प्लेटफ़ॉर्म्स को स्पष्ट करना चाहिए कि कौन-सा डेटा एकत्र किया जा रहा है, क्यों और उसका उपयोग कैसे होगा।

यह मुद्दा केवल WhatsApp तक सीमित नहीं है—यह भारत द्वारा डिजिटल संप्रभुता को स्थापित करने और यह सुनिश्चित करने का प्रयास है कि संवैधानिक अधिकार साइबरस्पेस में भी लागू हों।

मिडिल-ईस्ट में महायुद्ध की आहट?- वैश्विक शक्ति - संतुलन, आपातकालीन एडवाइजरी और तीसरे विश्वयुद्ध की आशंकाओं का समग्र विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास
भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पश्चिम एशिया एक बार फिर इतिहास के सबसे संवेदनशील मोड़ पर खड़ा दिखाई दे रहा है। क्षेत्र में तेज़ी से बदलते सैन्य समीकरण, मिसाइल और ड्रोन हमलों की नई लहरें, और महाशक्तियों की खुली भागीदारी ने हालात को अत्यंत गंभीर बना दिया है। ईरान इज़राइल और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच बढ़ता प्रत्यक्ष और परोक्ष टकराव केवल क्षेत्रीय संघर्ष नहीं रह गया, बल्कि यह वैश्विक शक्ति-संतुलन की परीक्षा बन चुका है।अंतरराष्ट्रीय कूटनीति की परतें हटती दिख रही हैं और सैन्य रणनीति खुले मैदान में उतर आई हैअमेरिका द्वारा अपने नागरिकों को खाड़ी और युद्धग्रस्त देशों से तुरंत निकलने की सलाह देना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि स्थिति सामान्य राजनयिक तनाव से कहीं आगे बढ़ चुकी है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि जब कोई महाशक्ति अपने नागरिकों को एक साथ अनेक देशों से तत्काल प्रस्थान का निर्देश देती है, तो यह केवल सावधानी नहीं बल्कि संभावित बड़े सैन्य विस्तार की पूर्व चेतावनी भी माना जाता है।अमेरिकी नेतृत्व ने स्पष्ट संकेत दिया है कि अभियान कुछ हफ्तों तक चल सकता है और आवश्यकता पड़ने पर इसे और लंबा किया जा सकता है। घोषित उद्देश्यों में ईरान की मिसाइल क्षमताओं को निष्क्रिय करना, उसकी नौसेना को कमजोर करना, परमाणु हथियार प्राप्त करने की संभावनाओं को समाप्त करना और उसके सहयोगी समूहों, जैसे हिज़्बुल्लाह को समर्थन से वंचित करना शामिल है।यह रणनीति केवल सैन्य नहीं, बल्कि भू-राजनीतिक पुनर्संरचना का प्रयास प्रतीत होती है। यदि ईरान की क्षेत्रीय शक्ति को निर्णायक रूप से कमजोर किया जाता है, तो पश्चिम एशिया में शक्ति संतुलन पूरी तरह बदल सकता है। किंतु इसके प्रतिउत्तर में ईरान समर्थक समूहों द्वारा असममित युद्ध की रणनीति अपनाई जा सकती है, जिससे संघर्ष का दायरा और विस्तृत हो सकता है।क्या तीसरे विश्वयुद्ध की आशंका वास्तविक है ?इतिहास गवाह है कि विश्वयुद्ध अचानक घोषित नहीं होते, बल्कि क्षेत्रीय संघर्षों की श्रृंखला के रूप में विकसित होते हैं। प्रथम विश्वयुद्ध बाल्कन क्षेत्र के एक सीमित संघर्ष से शुरू हुआ था। वर्तमान परिस्थिति में यदि खाड़ी के देश प्रत्यक्ष रूप से युद्ध में उतरते हैं, यदि क्षेत्रीय संगठन सक्रिय सैन्य भूमिका निभाते हैं, या यदि बड़ी शक्तियाँ रूस, चीन या यूरोपीय संघ किसी पक्ष में खुलकर शामिल होते हैं, तो स्थिति वैश्विक टकराव की ओर बढ़ सकती है।हालांकि, यह भी उतना ही सत्य है कि आधुनिक विश्व परस्पर निर्भरता से बंधा हुआ है।ऊर्जा बाजार, वैश्विक व्यापार, वित्तीय नेटवर्क और बहुपक्षीय संस्थाएँ किसी भी पूर्ण विश्वयुद्ध को अत्यंत महंगा बना देती हैं। इसलिए अधिकांश विश्लेषक मानते हैं कि तीसरे विश्वयुद्ध की संभावना भले ही चर्चा में हो, परंतु महाशक्तियाँ प्रत्यक्ष वैश्विक युद्ध से बचने की पूरी कोशिश करेंगी।

साथियों बात अगर हम 15 देशों के लिए आपातकालीन चेतावनीः कूटनीतिक भाषा में छिपा संदेश इसको समझने की करें तो, अमेरिकी विदेश विभाग की एडवाइजरी में जिन देशों का उल्लेख हुआ, उनमें खाड़ी के प्रमुख राष्ट्र सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत, कतर, बहरीन और ओमान शामिल हैं।युद्धग्रस्त या सीधे टकराव में घिरे क्षेत्रों में लेबनान, इराक, यमन, सीरिया के साथ-साथ वेस्ट बैंक और गाज़ा जैसे क्षेत्र भी आते हैं। इसके अतिरिक्त पड़ोसी देश मिस्र और जॉर्डन भी इस चेतावनी के दायरे में हैं।इन देशों में से कई विशेषकर सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात अब तक अपेक्षाकृत सुरक्षित और स्थिर माने जाते रहे हैं। ऐसे में वहाँ से भी तत्काल निकासी की अपील यह संकेत देती है कि संघर्ष सीमित दायरे में रहने वाला नहीं है। हवाई मार्ग बंद होने की आशंका, बड़ी

एयरलाइंस द्वारा उड़ानों का रद्द किया जाना और समुद्री मार्गों पर खतरे का बढ़ना ये सभी संकेत व्यापक सैन्य उथल- पुथल की ओर सटीक इशारा करते हैं।

साथियों बात अगर हम संघर्ष की जड़ें और विस्तार का स्वरूप इसको समझने की करें तो, ईरान और इज़राइल के बीच दशकों से वैचारिक और सामरिक शत्रुता रही है। परमाणु कार्यक्रम, मिसाइल तकनीक, और क्षेत्रीय प्रॉक्सी समूहों को समर्थन ये सभी मुद्दे लंबे समय से तनाव के केंद्र में रहे हैं। जब अमेरिका खुलकर इज़राइल के साथ खड़ा दिखाई देता है और संयुक्त सैन्य ऑपरेशन की बात सामने आती है, तो यह टकराव सीधे महाशक्ति बनाम क्षेत्रीय शक्ति का रूप ले लेता है।इस संघर्ष की एक विशेषता यह है कि यह पारंपरिक युद्ध की सीमाओं को पार कर चुका है।ड्रोन, साइबर अटैक, लंबी दूरी की मिसाइलें और समुद्री नाकेबंदी ये सभी आधुनिक युद्ध के उपकरण एक साथ सक्रिय हैं। यदि यह टकराव लंबा खिंचता है, तो ऊर्जा आपूर्ति, वैश्विक व्यापार मार्ग और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाज़ार गंभीर रूप से प्रभावित हो सकते हैं।

साथियों बात अगर हम भारत पर प्रभावः कूटनीति, अर्थव्यवस्था और आंतरिक सुरक्षा इसको समझने की करें तो, भारत के लिए पश्चिम एशिया केवल एक भू-राजनीतिक क्षेत्र नहीं, बल्कि ऊर्जा, प्रवासी भारतीयों और व्यापार का प्रमुख केंद्र है। लाखों भारतीय खाड़ी देशों में कार्यरत हैं। यदि वहां व्यापक युद्ध होता है, तो निकासी अभियान, ऊर्जा कीमतों में उछाल और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान जैसी चुनौतियाँ सामने सटीक रूप से आ सकती हैं।दिल्ली एयरपोर्ट पर अंतरराष्ट्रीय उड़ानों का रद्द होना, खाड़ी देशों से भारतीयों की वापसी की शुरुआत, और सीबीएसई द्वारा बहरीन, यूएई तथा सऊदी अरब में परीक्षाएँ स्थगित करना ये घटनाएँ बताती हैं कि संघर्ष का प्रभाव सीधे भारत तक पहुंच चुका है। भारतीय विदेश मंत्रालय अलर्ट मोड में है और विभिन्न देशों में रह रहे भारतीयों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रयास तेज़ किए गए हैं।

साथियों बात अगर हम जम्मू-कश्मीर और आंतरिक संवेदन शीलता को समझने की करें तो, पश्चिम एशिया में किसी बड़े इस्लामी नेता की मृत्यु या बड़े सैन्य टकराव का असर भारत के संवेदनशील क्षेत्रों विशेषकर जम्मू कश्मीर में दिखाई दे सकता है। घाटी में बढ़ते प्रतिबंध और प्रदर्शनों की खबरें यह दर्शाती हैं कि अंतरराष्ट्रीय घटनाएँ स्थानीय भावनाओं को प्रभावित कर सकती हैं। 2019 के बाद इतने बड़े पैमाने पर प्रदर्शन देखे जाना सुरक्षा एजेंसियों के लिए गंभीर संकेत है।भारत सरकार के लिए चुनौती दोहरी है, एक ओर बाहरी भू-राजनीतिक संकट, दूसरी ओर आंतरिक कानून-व्यवस्था की स्थिरता बनाए रखना। किसी भी प्रकार की सांप्रदायिक या राजनीतिक उग्रता को नियंत्रित करना इस समय अत्यंत आवश्यक है।ऊर्जा, अर्थव्यवस्था और वैश्विक बाजार यदि खाड़ी क्षेत्र में समुद्री मार्ग बाधित होते हैं, तो तेल की कीमतों में तीव्र वृद्धि हो सकती है।भारत जैसे ऊर्जा- आयातक देश के लिए यह आर्थिक दबाव बढ़ाने वाला होगा। महंगाई, चालू खाता घाटा और मुद्रा विनिमय दर पर सीधा प्रभाव पड़ सकता है। वैश्विक स्तर पर शेयर बाजारों में अस्थिरता और सोने जैसी सुरक्षित संपत्तियों की मांग में वृद्धि सटीक रूप से देखी जा सकती है।

साथियों बात अगर हम कूटनीतिक संतुलन की आवश्यकता को समझने की करें तो, भारत की विदेश नीति पारंपरिक रूप से संतुलन पर आधारित रही है ईरान के साथ ऐतिहासिक संबंध, इज़राइल के साथ रणनीतिक सहयोग और अमेरिका के साथ बढ़ती साझेदारी। वर्तमान संकट में यह संतुलन बनाए रखना कठिन किन्तु आवश्यक होगा। खुलकर किसी एक पक्ष का समर्थन करना दीर्घकालिक हितों को प्रभावित कर सकता है।संयुक्त राष्ट्र और अन्य बहुपक्षीय मंचों पर शांति की अपील, मानवीय सहायता और निकासी अभियानों में सक्रिय भूमिका ये भारत की प्राथमिकताएँ हो सकती हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि अनिश्चितता के युग में संयम की आवश्यकता, पश्चिम एशिया की वर्तमान स्थिति विस्फोटक है, परंतु इसे सीधे तीसरे विश्वयुद्ध की घोषणा कहना जल्दबाजी होगी। इतिहास यह सिखाता है कि बड़े युद्ध अक्सर गलत आकलनों और कूटनीतिक विफलताओं का परिणाम होते हैं। यदि संवाद की संभावनाएँ जीवित रखी जाती हैं और क्षेत्रीय शक्तियाँ संयम बरतती हैं, तो व्यापक वैश्विक युद्ध टाला जा सकता है।फिर भी, आपातकालीन एडवाइजरी, उड़ानों का रद्द होना, सैन्य अभियानों की अवधि बढ़ाने की घोषणा और क्षेत्रीय संगठनों की सक्रियता ये सभी संकेत इस बात के हैं कि विश्व एक अत्यंत अस्थिर दौर में प्रवेश कर चुका है।भारत सहित समूचे अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए यह समय सतर्क कूटनीति, आंतरिक स्थिरता और वैश्विक शांति के प्रति प्रतिबद्धता को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का है।

जगदीश सीरवी

बालाजी नगर स्थित श्री आईजी गौशाला बालाजी नगर मे द्वारा रंगों के त्यौहार होली पर आयोजित होली की पूजा- अर्चना, व होली दहन किया गया व रंगारंग गैर नृत्य किया । इस अवसर पर अध्यक्ष मंगलाराम पंवार, सचिव हुक्माराम सानपुरा, सह सचिव ढगलाराम सेपटा, कोषाध्यक्ष नारायणलाल परिहार, भंवरलाल मुलेवा, मांगीलाल परिहारिया ,माधुराम चोयल, समस्त महिला मंडल व गौभक्त उपस्थित रहे।

श्री जंभेश्वर मंदिर हैदराबाद में हवन पाहल संपन्न

जगदीश सीरवी

सुभाष नगर स्थित श्री गुरु जम्भेश्वर मंदिर प्रांगण में होली के पावन पर्व पर विश्नोई समाज के परंपरागत पवित्र हवन एवं पाहल का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों की संख्या में समाज के पुरूषों महिलाओं एवं बच्चों ने भाग लिया।

श्री विश्नोई महासभा हैदराबाद के अध्यक्ष सोहनलाल जाणी ने समाज एवं संस्थान के लिए खरीदी जा रही जमीन के लिए समाज के तमाम व्यवसायी बंधुओं से सहयोग की अपील की । कार्यक्रम को सफल बनाने में बाबूलाल साहू, रामलाल जाणी, मनोहर लोल जगदीश जी सारण श्रवण साहू, हीरालाल लोल, राजूराम ढाका, भागीरथ गोदारा, पुखराज मतवाला, शैतान जी ढाका ,हापूराम सियाक , जगदीश खोकर ,विकास गोदारा, भूपेंद्र मतवाला, राजूराम नेण ,भैराराम मतवाला ,जय किशन डूडी रमेश खिलेरी और समस्त बिश्नोई समाज का सहयोग रहा ।

खाड़ी युद्ध में किसके साथ खड़ा भारत

राजेश कुमार पासी

अमेरिका-इस्राएल का ईरान से युद्ध भयानक रूप ले चुका है। लगभग पूरा मध्य एशिया इसकी चपेट में आ गया है। अमेरिका जब ईरान पर हमला करने की धमकी दे रहा था, तब ईरान ने कहा था कि अगर उस पर हमला हुआ तो वो हर उस जगह हमला करेगा, जहां से उस पर हमला होगा। उसका स्पष्ट इशारा अरब देशों की तरफ था, जहां अमेरिकी सैन्य अड्डे हैं। अरब देशों को लगा कि अगर अमेरिका ने उनके देशों के अपने एयर बेस से ईरान पर हमले किये तो वो बेमतलब इस युद्ध में फंस जाएंगे। ईरान की मिसाइल पावर से भयभीत अरब देशों ने अमेरिका को अपनी जमीन का इस्तेमाल करने से रोक दिया। अमेरिका ने इस्राएल और अपने एयरक्राफ्ट कैरियर का इस्तेमाल करके ईरान पर हमला किया था, लेकिन जवाब में ईरान ने अरब देशों के अमेरिकी अड्डो पर हमला कर दिया। ईरान का हमला अमेरिकी अड्डों तक सीमित रहता, तो भी अरब देशों को ज्यादा परेशानी नहीं होती, लेकिन अब ईरान अरब देशों के नागरिक और आर्थिक ठिकानों पर हमले कर रहा है। जहां एक तरफ यूएई का आर्थिक स्रोत दुबई उसके निशाने पर है, तो दूसरी तरफ सऊदी अरब की आर्थिक रीढ़ अरामको को बर्बाद कर रहा है। कुवैत, बहरीन, कतर और ओमान पर भी ईरान हमले कर रहा है। देखा जाए तो अमेरिका को अपने अड्डे इस्तेमाल करने से रोकना ही अरब देशों को भारी पड़ गया है। अरब देशों की इस सोच के कारण अमेरिका उनकी सुरक्षा नहीं कर पा रहा है। उन्होंने अपनी जमीन का इस्तेमाल नहीं करने दिया, इसके बावजूद ईरान ने उनको निशाना बनाया है। समस्या यह है कि ये देश अपनी सुरक्षा करने के काबिल नहीं हैं, ये अपनी सुरक्षा के लिए पूरी तरह से अमेरिका पर निर्भर हैं। इनकी यही निर्भरता आज इन पर भारी पड़ रही है। ईरान इन देशों पर मिसाइलों की बारिश कर रहा है और ये रोक भी नहीं पा रहे हैं। ये पूरी तरह से अमेरिकी एयर डिफेंस सिस्टम पर निर्भर हैं, लेकिन ईरान के हमले के सामने ये सिस्टम फेल हो गया है। ईरान एक बार में इतनी मिसाइलें मारता है कि उनको रोक पाना सम्भव नहीं होता। देखा जाए तो अरब देश अपनी बर्बादी देख रहे हैं, लेकिन कुछ कर नहीं पा रहे हैं। समस्या यह है कि ईरान ने अमेरिकी अड्डों की ऐसी हालत कर दी है कि अब इन देशों की सुरक्षा के लिए इन अड्डों का इस्तेमाल भी करना मुश्किल होगा।

एक तरफ इतना भयानक युद्ध चल रहा है, तो दूसरी तरफ भारत में अलग तरह की राजनीति चल रही है। विपक्षी दल बार-बार सरकार से पूछ रहे हैं कि इस युद्ध में वो किसके पक्ष में खड़ी हुई है। ईरानी नेता खामनेई की मौत पर सरकार द्वारा ईरान से संवेदना प्रकट करने के लिए कहा जा रहा है। विपक्षी दल दबाव बना रहे हैं कि सरकार खामनेई की हत्या के लिए अमेरिका और इजराइल की निंदा करे। प्रधानमंत्री मोदी की राजनीति का एक बड़ा सच है कि वो कभी भी जल्दबाजी में नहीं होते। वो हर मामले में सोच-समझकर ही कदम आगे बढ़ाते हैं। घरेलू राजनीति में उनका यही रवैया है कि वो समय आने पर ही जवाब देते हैं। वैश्विक राजनीति में तो सारी दुनिया देख रही है कि वो हर मुद्दे पर अपनी प्रतिक्रिया नहीं देते हैं। वो सही वक्त आने पर ही बोलते हैं, अन्यथा चुप रहते हैं। टैरिफ के मुद्दे पर डोनाल्ड ट्रंप के दर्जनों बयानों के बाद भी उन्होंने चुप्पी बनाये रखी। ऐसे ही डोनाल्ड ट्रंप के ऑपरेशन सिंदूर रुकवाने वाले बयान पर भी उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। उनकी यही चुप्पी उनके दुश्मनों को परेशान कर देती है। मोदी ने न तो ईरान पर हमले पर कोई बयान दिया है और न ही ईरानी नेता की हत्या पर उनका कोई बयान आया है। वैसे भी देखा जाए तो खामनेई किसी संवैधानिक पद पर नहीं थे, इसलिए उनकी मौत पर कोई बयान देना जरूरी नहीं है। राजनीति में कहा जाता है कि कई बार कुछ नहीं बोलना भी बहुत कुछ बोलना होता है, मोदी इस कला में माहिर हैं। विपक्ष की सारी सोच और राजनीतिक मुस्लिम तुष्टिकरण का शिकार है । विपक्ष खामनेई की मौत पर इसलिए शोर मचा रहा है, क्योंकि भारत में बड़ी संख्या में शिया मुस्लिम रहते हैं। शिया मुसलमान खामनेई को अपना धर्मगुरु मानते हैं और उनके साथ उनकी भावनाएं गहराई से जुड़ी हुई हैं। खामनेई की हत्या पर सारी दुनिया के शिया मुसलमान बहुत दुखी और परेशान हैं। इसके विरोध में वो पूरी दुनिया में प्रदर्शन कर रहे हैं। भारत का विपक्ष चाहता है कि उनकी भावनाओं को समझते हुए भारत ईरान के साथ खड़ा हो जाये।

मोदी जब सत्ता में आये थे, तो उन्होंने घोषणा की थी कि उनकी नीति केवल 'इंडिया फर्स्ट' होगी। उन्होंने कहा था कि वो केवल भारत के हितों को देखकर ही फैसला लेंगे। ईरान और इस्राएल दोनों ही भारत के मित्र देश हैं, लेकिन दोनों में बड़ा अंतर है। ईरान के साथ भारत का लेनदेन का रिश्ता रहा है, जबकि इजराइल के साथ हमारे रणनीतिक संबंध हैं। बात अगर सिर्फ ईरान और इजराइल की होती तो भारत शायद ईरान के पक्ष में खड़ा हो सकता था, क्योंकि हमला इजराइल द्वारा किया गया है। भारत किसी भी देश पर हमले के खिलाफ है और सारे मुद्दे बातचीत से हल करने का समर्थक है । इस युद्ध में अमेरिका भी शामिल है, इसलिए भारत ईरान के साथ नहीं जा सकता, लेकिन अपना विरोध जता सकता था। समस्या यह है कि ये युद्ध ऐसा रूप ले चुका है कि ईरान का पक्ष लेना देश के हितों से समझौता करना होगा। सवाल यह है कि भारत का हित कहां है। ईरान ने लगभग सभी अरब देशों पर हमला कर दिया है और अरब देशों के साथ भारत के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक हित इतनी गहराई से जुड़े हुए हैं कि अंदाजा लगाना भी मुश्किल है। अब ये युद्ध इजराइल-अमेरिका और ईरान के बीच नहीं रह गया है, ये अरब देशों का युद्ध बन गया है। अरब देशों में भारत के लगभग एक करोड़ लोग रहते हैं। भारत को उनकी चिंता करनी चाहिए या ईरान से दोस्ती के नाम पर उनके रोजगार और सुरक्षा को खतरे में डाल देना चाहिए। आप विचार करें कि देश का हित किसमें है, एक प्रधानमंत्री होने के नाते मोदी जी को किसके पक्ष में खड़े होना चाहिए। इस्लामिक संगठन ओआईसी में 56 देश हैं, कोई भी ईरान के समर्थन में नहीं आया है । ईरान के साथ भारत का व्यापार सिर्फ दो बिलियन डॉलर का है और दुसरे पक्ष के साथ 400 बिलियन डॉलर का है । ऐसे में भारत को किसके साथ खड़ा होना चाहिए, इसका जवाब स्पष्ट हो जाता है। ईरान में सिर्फ दस हजार भारतीय रहते हैं, क्या सरकार दस हजार लोगों के लिए एक करोड़ लोगों के हितों की बलि चढ़ा दे। चीन और रूस ईरान के सबसे बड़े दोस्त हैं, ईरान ने चीन को सस्ता तेल और रूस को हथियार दिये हैं । उन्होंने निंदा करने के अलावा ईरान के लिए क्या किया है।

मोदी अपनी इंडिया फर्स्ट की नीति का त्याग करके, क्या ईरान के लिए अमेरिका, इस्राएल, यूरोपीय देशों और अरब देशों के खिलाफ खड़े हो जाएं। इस देश का विपक्ष भारत की बर्बादी चाहता है, ताकि सरकार को घेरा जा सके। गलत फैसले लेने के लिए मजबूर किया जाए और फिर परिणामों के लिए सरकार को दोष दिया जाए । जो लोग ईरान को भारत का दोस्त बता रहे हैं, ये उनकी अपनी सोच है। लेकिन जब भी पाकिस्तान का मामला आया है, उसने हमारे खिलाफ जाकर पाकिस्तान का साथ दिया है। युद्ध के समय उसने पाकिस्तान को अपनी सीमा से सेना हटाने की सुविधा दी है, ताकि वो पूरी सेना भारत के खिलाफ युद्ध में झोंक सके । ईरान ने कश्मीर मुद्दे पर हमेशा पाकिस्तान का साथ दिया है। ईरान ने अपने ही हज़ारो लोगों की हत्या कर दी है और हज़ारो को जेल में डाला हुआ है। कई आतंकवादी संगठन खड़े किए हुए हैं, जो मासूम लोगों की हत्याएं करते हैं । एक क्रूर तानाशाह के खात्मे के लिए भारत को क्यों अफसोस जाहिर करना चाहिए। कांग्रेस और दूसरे विपक्षी दल चाहते हैं कि शिया मुसलमानों की खामनेई के प्रति भावनाओं को देखते हुए भारत को ईरान के साथ खड़े होना चाहिए। ये वही लोग हैं जो बंगलादेशी हिंदुओं की हत्याओं पर चुप्पी साध कर बैठे हुए थे। कश्मीर घाटी हिंदुओ से खाली कर दी गई, किसी की भावनाएं नहीं भड़की। इनका मतलब यह है कि शियाओं की भावनाओं को देखते हुए भारत पूरी दुनिया से दुश्मनी मोल ले ले और अपनी बर्बादी के रास्ते पर चल पड़े। मोदी जी ने बहरीन, यूएई और सऊदी अरब से बात करके अपना पक्ष बिना बोले ही बता दिया है। उन्होंने इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू से भी बात की है। आज हर देश अपने हितों को देखकर ही फैसले लेता है, भारत का हित अमेरिका, इजराइल और अरब देशों से जुड़ा हुआ है। ईरान पर हमले का समर्थन नहीं किया जा सकता, लेकिन अरब देशों पर हमले का समर्थन कैसे किया जा सकता है। ईरान बेहद आक्रामक होकर अरब देशों पर हमले कर रहा है, ऐसे में भारत का उनके साथ खड़े होना जरूरी है । भारत ने किसी का पक्ष नहीं चुना है, भारत ने अपना हित चुना है, जो कि हर देश का अधिकार है ।

ईरान-इजरायल युद्ध से सोना-चांदी ही नहीं मंहगाई भी बेकाबू होगी?

सौरभ वार्ष्णेय

पश्चिम एशिया में ईरान और इजरायल के बीच बढ़ता तनाव केवल भू-राजनीतिक संकट नहीं बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए भी बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। युद्ध या युद्ध जैसी स्थिति की आशंका ने अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अनिश्चितता बढ़ा दी है। इसका सीधा असर सोना और चांदी जैसी सुरक्षित निवेश धातुओं की कीमतों पर दिखाई दे रहा है जो लगातार उछाल पर हैं। ऐसे में युद्ध अधिक दिनों तक जारी रहेगा तो इससे सोना चांदी के भाव से आसमान छुयेंगे ही, साथ ही साथ मंहगाई भी चरम सीमा पर पहुंचेगी क्योंकि कच्चे तेल के भाव बढने से मंहगाई स्वयं अपना आकार ले लेती है। वैसे भी इन दिनों अमेरिका ने टैरिफ बम से भी अर्थव्यस्था में मंदी ला रखी है जबकि अमेरिका का सुप्रीम कोर्ट के आदेश भी बेअसर दिखाई दे रहे हैं जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी गहरा असर डालना शुरू कर दिया है। वित्तीय बाजारों में अस्थिरता पैदा कर दी है। सोने और चांदी की कीमतों पर देखने को मिल रहा है जो लगातार नए रिकॉर्ड की ओर बढ़ रही हैं।

इतिहास गवाह रहा है कि जब -जब दुनिया में युद्ध हुआ है तब-तब आर्थिक संकट गहराता है, निवेशक शेयर बाजार से दूरी बनाकर सुरक्षित विकल्पों की ओर रुख करते हैं। सोना और चांदी को पारंपरिक रूप से सेफ हेवन माना जाता है। ईरान-इजरायल संघर्ष के कारण तेल आपूर्ति बाधित होने, वैश्विक व्यापार प्रभावित होने और महंगाई बढने की आशंका ने निवेशकों को कीमती धातुओं की ओर मोड़ दिया है। ज्ञात रहे कि पश्चिम एशिया दुनिया के प्रमुख तेल उत्पादक क्षेत्रों में से एक रही है। यदि युद्ध संघर्ष बढ़ता है तो कच्चे तेल की कीमतों में उछाल तय है। तेल महंगा होगा तो परिवहन, उत्पादन और उपभोग की लागत बढ़ेगी, जिससे महंगाई तेज हो सकती है। ऐसी स्थिति में केंद्रीय बैंक ब्याज दरों को लेकर सतर्क रुख अपनाते हैं और बाजार में अस्थिरता बढ़ती है। इस अस्थिरता का लाभ सोना-चांदी को मिलता है।

अगर ऐसे में युद्ध के मद्देनजर भारत की बात करे तो इसका भारत पर व्यापक असर पड़ सकता है। भारत जैसे देश, जो सोने के बड़े उपभोक्ता में से एक हैं, वहां घरेलू बाजार में कीमतों का सीधा असर आम उपभोक्ताओं पर पड़ता है। शादी-ब्याह का मौसम हो या निवेश का दौर—सोने की बढ़ती कीमतें लोगों की जेब पर अतिरिक्त बोझ डालती हैं। चांदी भी औद्योगिक उपयोग में व्यापक है, इसलिए उसकी कीमतों में उछाल उद्योगों की लागत बढ़ा सकता है।

अक्सर देखा गया है कि युद्ध संबंधी खबरों के बीच कीमतें तेजी से चढ़ती हैं, लेकिन हालात सामान्य होते ही कुछ हद तक स्थिरता लौट आती है। इसलिए निवेशकों को भावनात्मक निर्णय लेने से बचना चाहिए। दीर्घकालिक निवेश रणनीति और संतुलित पोर्टफोलियो ही समझदारी भरा कदम है।

ईरान- इजरायल तनाव ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि वैश्विक राजनीति का सीधा प्रभाव आम आदमी की थाली और तिजोरी दोनों पर पड़ता है। सोना-चांदी की कीमतों में उछाल केवल बाजार की हलचल नहीं बल्कि विश्व व्यवस्था में बढ़ती अस्थिरता का संकेत है। ऐसे समय में सरकारों को कूटनीतिक समाधान की दिशा में सक्रिय होना चाहिए और निवेशकों को संयम और विवेक से काम लेना चाहिए। बातचीत से हल निकालना चाहिए। इसके लिए शांति पहल देशों को आगे आना चाहिए ताकि आगामी नर संहार को रोका जा सकें।

होली (फगुआ)- आज के समय के लिए एक ज़रूरी संदेश

सूर्य प्रसाद सूरज बीरे "शूरवीर"

नीदरलैंड, यूरोप और पूरी दुनिया के लिए होली, जिसे हम प्यार से फगुआ भी कहते हैं, केवल रंगों का त्योहार नहीं है। यह नये जीवन, नयी ऊर्जा, क्षमा और मिल-जुलकर आगे बढ़ने का संदेश देता है। वेदों में जो १ विशेष होली-सम्बन्धी मंत्र मिलते हैं, वे हमें याद दिलाते हैं कि मनुष्य, प्रकृति और पूरा ब्रह्माण्ड - सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

आज, जब दुनिया में जलवायु परिवर्तन, मानसिक तनाव, युद्ध, नफ़रत और अकेलापन बढ़ रहा है, तब होली और ये मंत्र हमें एक दूसरा रास्ता दिखाते हैं - रंग, प्रकाश, सादगी, सम्मान और एकता का रास्ता।

वेद के १ मन्त्र और होली - आसान भाषा में-

वेद के ये १ मन्त्र हमें तीन बड़ी बातें सिखाते हैं.

1.प्रकृति का सम्मान - धरती, बारिश, फसल, पेड़-पौधे, जानवर - ये सब हमारे साथी हैं।

2.मेहनत की पवित्रता - हल चलाना, बीज बोना, फसल काटना, जानवरों की देखभाल करना - ये केवल काम नहीं, पूजा के बराबर हैं।

3.जीवन का चक्र - सर्दी के बाद गर्मी, अंधेरे के बाद प्रकाश, दुःख के बाद सुख - हर चीज़ बदलती है, और हर कठिन समय के बाद एक नई शुरुआत आती है।

वेद के ये ३१ होली मन्त्र हमें बताते हैं कि मनुष्य, प्रकृति और ब्रह्माण्ड एक ही बड़े परिवार के हिस्से हैं। इन मन्त्रों में धरती (सीता), वर्षा, ऋतुएँ, अनाज, पशु, हल, हलवाहा, किसान - सबका आदर किया गया है। हल चलाना, बीज बोना, फसल काटना, पशुओं की देखभाल करना - यह सब केवल "काम" नहीं, बल्कि पूजा के समान पवित्र कर्तव्य माना गया है। ये मन्त्र प्रार्थना करते हैं कि धरती उर्वर रहे, फसल भरपूर हो, वर्षा समय पर हो, पशु और मनुष्य स्वस्थ रहें, और हमारा जीवन सौ वर्ष तक बल, शांति और समृद्धि के साथ चले।

साथ ही, ये १ मन्त्र हमें अन्तरात्मा की होली भी सिखाते हैं -यानी भीतर की सफ़ाई। इनमें बार-बार यह भावना आती है कि अगर किसी कर्म में कमी या ज़्यादती रह जाए, तो ईश्वर (अग्नि) उसे सुधार दे और हमारे अच्छे संकल्प पूर्ण करे। वे हमें याद दिलाते हैं कि समृद्धि केवल धन नहीं, बल्कि संतुलन, कृतज्ञता, साझेदारी और सादगी में भी है। कुल मिलाकर, ये मन्त्र सन्देश देते हैं कि मनुष्य और धरती दुश्मन नहीं, बल्कि साथी हैं; और जब हम प्रकृति, श्रम और एक-दूसरे का सम्मान करते हैं, तभी असली होली - रंग, प्रकाश, शांति और कल्याण - हमारे जीवन में आती है।

1.होली भी यही कहती है- होलिका दहन बुराई, नफ़रत, ईर्ष्या, अहंकार, इन सबको आग में जलाने का प्रतीक है। रंगों की होली नये मौसम, नयी फसल, नयी उम्मीद और नये रिश्तों का स्वागत है।

2. आज की दुनिया में यह संदेश क्यों ज़रूरी है?

आज नीदरलैंड, यूरोप और पूरी दुनिया कुछ बड़ी चुनौतियों से गुज़र रही है- जलवायु परिवर्तन - मौसम बदल रहा है, गर्मी, बाढ़, सूखा बढ़ रहा है।

प्रकृति से दूरी - ज़्यादातर समय मोबाइल,

कंप्यूटर और स्क्रीन पर गुज़र जाता है।

तनाव और अकेलापन -तेज़ दौड़ती ज़िंदगी, प्रेशर, अकेला महसूस करना।

विभाजन - अलग-अलग धर्म, संस्कृति, भाषा और सोच के कारण दूरी और गलतफहमियाँ।

वेद के मन्त्र और होली का संदेश हमें कहते हैं.

"मनुष्य और प्रकृति दुश्मन नहीं, साथी हैं।"

"रंग मिलकर ही सुंदर लगते हैं, इंसान भी।"

3. नीदरलैंड और यूरोप में होली की प्रासंगिकता:-

नीदरलैंड और यूरोप में हम एक बहु-सांस्कृतिक समाज में रहते हैं.

यहाँ भारतीय, सरनामी, सुरिनामी, तुर्क, मोरक्कन, यूरोपीय और कई अन्य पृष्ठभूमि के लोग साथ रहते हैं। भाषा अलग, खाने अलग, रीति-रिवाज़ अलग - लेकिन दिल की ज़रूरतें एक जैसी हैं - प्यार, सम्मान, सुरक्षा और अपनापन।

होली हमें सिखाती है:

किसी पर ज़बरदस्ती रंग न लगाना - सम्मान भी एक रंग है।

किसी को उसके धर्म, त्वचा के रंग, भाषा या पासपोर्ट से मत आँको - इंसान की असली पहचान उसकी मानवता है।

मंदिर, समाज-भवन, परिवार - ये सब जगहें हैं जहाँ हम फिर से समुदाय महसूस करते हैं।

जब हम होली परः साथ बैठकर हवन करते हैं, भजन गाते हैं, सरल भोजन और प्रसाद बाँटते हैं, और माफ़ी माँगते और देते हैं, तब हम केवल एक त्योहार नहीं मनाते बल्कि समाज को मजबूत बनाते हैं।

4. प्रकृति और पर्यावरण - होली का हरा संदेश

वेद के मन्त्र बार-बार कहते हैं- धरती (सीता) का सम्मान करो। पेड़-पौधों, अनाज, जानवरों और पानी को बचाओ। फसल, अनाज और बारिश - ये सब ईश्वर के उपहार हैं।

आज, जबः जंगल कट रहे हैं, समुद्र प्रदूषित हो रहे हैं, हवा दूषित हो रही है,

तब ये पुरानी आवाज़ें हमें नई तरह से पुकारती हैं- कम बर्बादी, ज़्यादा कृतज्ञता, कम प्लास्टिक, ज़्यादा प्रकृति, कम लालच, ज़्यादा संतुलन।

होली के रंग हमें याद दिला सकते हैं कि असली रंगः हरी धरती, नीला आसमान, स्वच्छ पानी और स्वस्थ पेड़-पौधे हैं।

5. मन, मानसिक स्वास्थ्य और होली

आज की दुनिया में लोग बाहर से मुस्कुराते हैं, मगर अंदर सेः थके हुए, बोझिल, चिंतित, और कभी-कभी टूटे हुए होते हैं।

होली का एक मनोवैज्ञानिक संदेश भी हैः

पुरानी बातों, झगड़ों और शिकायतों को छोड़ना सीखो। दिल पर जमा हुआ "धूल" - नफ़रत, गुस्सा, जलन - इसे धो डालो। हँसी, गीत, रंग, संगत -ये सब दिल का इलाज हैं।

जब हम किसी को सच्चे मन से कहते हैंः "भूल-चूक माफ़, चलो नये सिरे से शुरू करते हैं"

तो यह एक अंदरूनी होली होती है - दिल के भीतर की होली।

6. सरल जीवन, गहरी खुशी

३१ मन्त्र हमें एक और बहुत बड़ा संदेश देते हैंः "सादगी में ही असली समृद्धि है।"

होली इसी का उत्सव हैः

महँगे कपड़ों की ज़रूरत नहीं - पुराने कपड़ों से भी त्योहार बनता है।

महँगे होटलों की ज़रूरत नहीं -मंदिर या घर का आँगन ही काफी है।

ज़्यादा दिखावे की ज़रूरत नहीं - सच्चे भजन, मुस्कान, साझा भोजन और रंग ही पर्याप्त हैं। आज, जब हर चीज़ खरीदने की चीज़ बनती जा रही है, होली हमें याद दिलाती है कि-

खुशी मार्केट से नहीं, दिल से आती है। सुख वस्तु से नहीं, रिश्तों और प्रकृति से आता है।

7. निष्कर्षः होली -एक जिम्मेदारी भी है

हम कह सकते हैं कि होली केवल एक दिन का त्योहार नहीं, बल्कि जीवन की दिशा है।

३१ वेद मंत्र हमें सिखाते हैं - धरती का सम्मान, मेहनत की इज़्ज़त, प्राकृतिक लय और कृतज्ञता।

होली हमें सिखाती है - बुराई को जलाना, नये संबंध बनाना, माफ़ करना और रंगों से दिल भरना।

नीदरलैंड, यूरोप और पूरी दुनिया में होली हमें एक नया व्रत दे सकती हैः

हम प्रकृति के साथ मिलकर चलेंगे। हम समाज में पुल बनाएँगे, दीवारें नहीं। हम अपने बच्चों को सिखाएँगे कि रंग केवल चेहरे पर नहीं, सोच में भी होने चाहिए - सम्मान, दया और न्याय के रंग।

मेरा विनम्र निवेदन हैः इस वर्ष होली पर केवल रंग न खेलें,

थोड़ा समय निकालकर खुद से पूछें - मैं अपने परिवार, समाज, देश और धरती के लिए कौन सा "रंग" बनना चाहता/चाहती हूँ?

ईश्वर से प्रार्थना है कि ये होली हम सबके जीवन में नया प्रकाश, नया संतुलन और नया प्रेम लेकर आए। शुभ होली।

-सूर्य प्रसाद सूरज बीरे "शूरवीर"

(परिचय - अध्यक्ष, हिन्दी परीक्षा समिति, (हिन्दी परिषद नीदरलैंड (एचपीएन), भूतपूर्व अध्यक्ष, आर्य समाज नीदरलैंड (आसन-एएसएएन), सचिव, वैदिक परिषद, (प्रतिनिधि आर्य समाज नीदरलैंड। अध्यक्ष, संस्था सरनामी नीदरलैंड, प्रथम सचिव, सूरीनाम हिन्दी परिषद।(१९७७-१९८५))

स्वास्थ्य विभाग द्वारा एच.पी.वी. वैक्सीन की शुरुआत

अमृतसर, 3 मार्च (साहिल बेरी)

पंजाब सरकार के निर्देशों के तहत सिविल सर्जन डॉ. सतिंदरजीत सिंह बजाज के नेतृत्व में जिला अमृतसर में ह्यूमन पैपिलोमा वायरस (एचपीवी) वैक्सीन की शुरुआत सिविल अस्पताल, अमृतसर से की गई।

इस अवसर पर डॉ. बजाज ने बताया कि एचपीवी वैक्सीन की शुरुआत आज से पूरे जिले में कर दी गई है। इस वैक्सीन को 14 से 15 वर्ष की बालिकाओं को सर्वाइकल कैंसर से सुरक्षित रखने के लिए लगाया जाएगा। पंजाब सरकार का लक्ष्य वर्ष 2030 तक सर्वाइकल कैंसर का उन्मूलन करना है। जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. रश्मि ने बताया कि इस वैक्सीन का पूरा रिकॉर्ड यू-विन पोर्टल पर दर्ज किया जाएगा तथा 3 मार्च 2026 से इसे नियमित टीकाकरण सूची में शामिल कर लिया गया है।

इस अवसर पर सीनियर मेडिकल अधिकारी डॉ. रजनीश कुमार, डिप्टी मेडिकल अधिकारी डॉ. प्रीतविन, जिला एम.ई.आई.ओ. अमरदीप सिंह, डॉ. मनमीत कौर, डॉ. वनीत, डॉ. नेहा, डॉ. सरताज सिंह, डॉ. जसकरणजोत कौर, डॉ. अंजू सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

झारखंड में घर बुलाये तांत्रिक ने नाबालिग के साथ किया बलात्कार

मां ने की शिकायत, पोस्को एक्ट के साथ भेजा गया जेल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड ऊ

चाईबासा, पश्चिम सिंहभूम जिले के जगन्नाथ पुर थाने के एक गांव में 57 वर्षीय तांत्रिक ने एक घर में नाबालिग लड़की से कथित तौर पर बलात्कार किया। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। बलात्कार के एक मामले में पहले भी जेल जा चुके तांत्रिक को सोमवार को भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पॉक्सो) की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किए जाने के बाद गिरफ्तार कर लिया गया।

अनुमंडल पुलिस अधिकारी (जगन्नाथपुर) रापेल मुर्मू ने बताया कि पीड़िता की मां ने रविवार को जगन्नाथपुर थानाक्षेत्र में स्थित गांव में अपने घर पर काले जादू के जरिये बीमार बेटे का इलाज कराने के लिए तांत्रिक को बुलाया था। देश के कई इलाकों में तांत्रिकों से बीमारियों का इलाज कराना आम बात है। एसडीपीओ ने बताया कि अनुष्ठान करने के बाद तांत्रिक ने शिकायतकर्ता और उसके बीमार बेटे को पास के एक तालाब पर परिक्रमा करने और उसमें पूजा सामग्री को विसर्जित करने के लिए भेजा था

पुलिस ने बताया कि बीमार लड़के की 17 वर्षीय बड़ी बहन घर पर अकेली थी, और तांत्रिक ने उसके साथ जबरदस्ती की। पुलिस के अनुसार पीड़िता ने घर लौटने पर मां को आपबीती बताई, जिसके बाद मां ने थाने में शिकायत दर्ज करा दी। मुर्मू ने बताया कि मामले की जांच के लिए गठित पुलिस टीम ने सोमवार को आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि तांत्रिक 2014 में जगन्नाथपुर में बलात्कार के एक मामले में जेल गया था।

नॉलेज बेस्ड इंडस्ट्रीज स्थापित करने की दिशा में पहल करेगा टाटा

मुख्यमंत्री हेमंत के साथ टाटा स्टील ने की प्रेसवार्ता

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड में टाटा समूह नया निवेश करने जा रही है। यह निवेश नई टेक्नोलॉजी आधारित होगा। निवेश से संबंधित प्रस्ताव पर राज्य सरकार का पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन की उपस्थिति में टाटा सन्स के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने आज मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में प्रेस वार्ता के दौरान यह जानकारी दी। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि टाटा समूह का झारखंड से काफी पुराना रिश्ता रहा है। इस समूह ने अपने सफ़र की शुरुआत इसी राज्य से की थी। आज टाटा समूह की वैश्विक स्तर पर एक अलग पहचान है। यह समूह विभिन्न संस्थानों- प्रतिष्ठानों के माध्यम से झारखंड समेत देश के विकास में अहम योगदान करता आ रहा है। इस समूह का सफर निरंतर आगे बढ़ रहा है। मुझे उम्मीद और विश्वास है कि यह सफर पूरी मजबूती के साथ अनवरत जारी रहेगा।

टाटा सन्स के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के कुशल नेतृत्व और दूरदर्शी सोच की सराहना करते हुए कहा कि आज झारखंड जैसे राज्य में निवेश अनुकूल माहौल तैयार हो रहा है। औद्योगिक विकास को लेकर राज्य सरकार का रोड मैप निवेशकों को काफी आकर्षित कर रहा है। मुख्यमंत्री के साथ आज हुई बैठक में निवेश से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर व्यापक चर्चा हुई और इसके सकारात्मक परिणाम आपको देखने को मिलेंगे।

टाटा सन्स के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने कहा कि मुख्यमंत्री की सोच के अनुरूप झारखंड में नॉलेज बेस्ड इंडस्ट्रीज स्थापित करने की दिशा में पहल की जाएगी। इसके लिए राज्य सरकार और टाटा के अधिकारियों की एक टीम बनेगी। उन्होंने कहा कि राज्य के विकास में टाटा समूह हर स्तर पर पूरा सहयोग देगी।

टाटा समूह के कई प्रतिष्ठान इस राज्य में कार्यरत हैं। इसमें टाटा स्टील और टाटा मोटर्स जैसी बड़ी फैक्ट्रियां भी शामिल हैं। अब इन प्रतिष्ठानों में नई टेक्नोलॉजी से उत्पादन की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। ऐसे में नई टेक्नोलॉजी पर बड़े निवेश की योजना है। इसके अंतर्गत टाटा स्टील में नई टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से जहां प्रदूषण नियंत्रण के साथ उत्पादन की प्रक्रिया तेज होगी, वहीं उन्नत हाइड्रोजन बेस्ड वाहन निर्माण संयंत्र स्थापित किया गया है।

झारखंड के विकास में टाटा समूह अपनी पूरी भागीदारी निभाना के लिए तैयार है। ऐसे में सीएसआर का दायरा बढ़ाया जाएगा। इसकी राशि में बढ़ोतरी करने की योजना है, ताकि इसका ज्यादा से ज्यादा लाभ यहां के लोगों को मिल सके। उन्होंने आगे कहा कि यहाँ के युवाओं के कौशल विकास में टाटा समूह राज्य सरकार के साझेदार की भूमिका निभाएगी। ताकि, आज की जरूरत के हिसाब से उनके कौशल को निखार कर तैयार किया जा सके।

झारखंड राज्य सजा पुनरीक्षण पर्षद ने 23 कैदियों की रिहाई पर सहमति जताई

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन की अध्यक्षता में आज कांके रोड, रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में झारखंड राज्य सजा पुनरीक्षण परिषद की 36वीं बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में राज्य के विभिन्न कारागारों में आजीवन सजा काट रहे 23 कैदियों को रिहा किए जाने से संबंधित निर्णय पर सहमति बनी। बैठक में राज्य सजा पुनरीक्षण परिषद द्वारा अनुशंसित नए मामलों के साथसाथ पिछली बैठकों में रिहाई से संबंधित अस्वीकृत किए गए 34 मामलों की भी गहन समीक्षा की गई।मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने राज्य सजा पुनरीक्षण परिषद की अनुशंसा के आलोक में आजीवन सजा काट रहे 34 कैदियों के रिहाई प्रस्ताव पर बिंदुवार गहन विचारविमर्श किया, और अंततः 23 कैदियों की रिहाई पर सहमति दी गई। मुख्यमंत्री ने कैदियों के अपराध की प्रवृत्ति, न्यायालयों, संबंधित जिलों के पुलिस अधीक्षकों, जेल अधीक्षकों एवं प्रोबेशन अधिकारियों द्वारा दिए गए मंतव्यों की समीक्षा करने के बाद यह सुनिश्चित किया कि रिहाई न्यायिक नियमों, सामाजिक सुरक्षा एवं कारा अधिनियमों के दृष्टिकोण से वैध और उचित रहे। बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने रिहा होने वाले कैदियों के लिए एक व्यवस्थित डेटाबेस तैयार करने का निर्देश दिया। उन्होंने यह भी कहा कि डायनबिसाही के आरोप में रहे कैदियों के साथ महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया जाए।मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि रिहा होने वाले कैदियों को सरकार की कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ा जाए, उनकी आय सृजन और सामाजिक पुनर्वास सुनिश्चित किया जाए, तथा जिला स्तर पर उनके जीवनयापन के लिए निर्धारित जिला समन्वयकों की विशेष जिम्मेदारी तय की जाए। बैठक में मुख्य सचिव अविनाश कुमार, प्रधान सचिव, गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग श्रीमती वंदना दादेल, डीजीपी श्रीमती तदाशा मिश्रा, प्रधान सचिवविधि परामर्शी, विधि विभाग नीरज कुमार श्रीवास्तव, महानिरीक्षक, कारा एवं सुधारात्मक सेवाएं सुदर्शन प्रसाद मंडल, न्यायिक आयुक्त अनिल कुमार मिश्रा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे॥

अमृतसर से पत्रकार साहिल बेरी द्वारा होली की शुभकामनाएँ

अमृतसर, 3 मार्च (साहिल बेरी)

होली के पावन अवसर पर अमृतसर से परिवहन विशेष समाचार पत्र के पत्रकार साहिल बेरी ने शहरवासियों, व्यापारी वर्ग तथा देश-विदेश में बसे पंजाबियों को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। अपने संदेश में उन्होंने कहा कि होली का

पर्व प्रेम, भाईचारे और एकता का प्रतीक है। यह त्योहार हमें रंगों की तरह अपने जीवन में खुशियाँ और सौहार्द भरने का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि समाज में बढ़ती चुनौतियों के बीच ऐसे पर्व हमें एकजुट होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने अपील की कि होली का त्योहार सुरक्षित एवं पर्यावरण-मित्र तरीके से मनाया जाए। रंगों का प्रयोग करते समय स्वास्थ्य और पर्यावरण का विशेष ध्यान रखा जाए तथा पानी की बचत की जाए। उन्होंने कहा कि व्यापारी वर्ग सदैव सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करता आया है और भविष्य में भी शहर की तरक्की और खुशहाली के लिए अपना योगदान देता रहेगा। साहिल बेरी ने कहा कि होली केवल रंगों का त्योहार नहीं है, बल्कि यह मन के गिले-शिकवे दूर कर नए रिश्ते बनाने का अवसर भी है। उन्होंने सभी से आपसी प्रेम, सहयोग और सद्भावना के साथ त्योहार मनाने तथा समाज में भाईचारे का वातावरण बनाए रखने की अपील की। अंत में उन्होंने प्रार्थना की कि यह रंगों भरा त्योहार सभी के जीवन में स्वास्थ्य, समृद्धि और सफलता लेकर आए तथा अमृतसर शहर में शांति और प्रगति की रोशनी सदैव बनी रहे।

अमृतसर के मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने होली के पावन अवसर पर शहरवासियों को दी हार्दिक शुभकामनाएं

अमृतसर, 3 मार्च (साहिल बेरी)

अमृतसर के मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने होली के पावन एवं रंगों से भरे त्योहार के अवसर पर समस्त शहरवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं।

अपने संदेश में उन्होंने कहा कि होली खुशी, प्रेम, भाईचारे और आपसी सद्भाव का प्रतीक है। यह त्योहार हमें आपसी मतभेद और वैमनस्य को भुलाकर एकजुट होकर रहने की प्रेरणा देता है।

मेयर ने कहा कि होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ने का पर्व है। यह दिन समाज में पारस्परिक सम्मान, सहयोग और सौहार्द की भावना को मजबूत करने का संदेश देता है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि इस अवसर पर

पर्यावरण अनुकूल रंगों का उपयोग करें तथा पानी की बचत का विशेष ध्यान रखें, ताकि उत्सव के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण भी सुनिश्चित किया जा सके।

उन्होंने बताया कि नगर निगम द्वारा त्योहार के मद्देनज़र शहर में सफाई एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए विशेष प्रबंध किए गए हैं, ताकि लोग शांतिपूर्ण एवं उत्साहपूर्वक होली मना सकें। उन्होंने सभी नागरिकों से कानून-व्यवस्था और भाईचारे की भावना बनाए रखते हुए प्रेम एवं सद्भाव के साथ त्योहार मनाने की अपील की।

अंत में मेयर ने कामना की कि यह रंगों का पर्व हर घर में सुख-समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य और उन्नति के नए रंग भर दे तथा अमृतसर को और अधिक स्वच्छ, सुंदर और समृद्ध बनाने के लिए सभी को मिलकर कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करे।

इलेक्ट्रिकल ट्रेडर्स एसोसिएशन अमृतसर के अध्यक्ष एवं पंजाब प्रदेश व्यापार मंडल के जनरल सेक्रेटरी श्री बलबीर भसीन ने दी होली की शुभकामनाएं

अमृतसर, 3 मार्च (साहिल बेरी)

इलेक्ट्रिकल ट्रेडर्स एसोसिएशन अमृतसर के अध्यक्ष एवं पंजाब प्रदेश व्यापार मंडल के जनरल सेक्रेटरी श्री बलबीर भसीन ने होली के पावन अवसर पर शहरवासियों, व्यापारी भाईचारे तथा देश-विदेश में बसे पंजाबियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं। अपने संदेश में श्री भसीन ने कहा कि होली का त्योहार प्रेम, एकता और भाईचारे का प्रतीक है। यह पर्व हमें रंगों की तरह अपने जीवन में खुशियां और आपसी सौहार्द बढ़ाने का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि समाज में बढ़ती चुनौतियों के बीच ऐसे त्योहार हमें एकजुट होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने अपील की कि होली का त्योहार सुरक्षित और पर्यावरण-हितैषी तरीके से मनाया जाए। रंगों का उपयोग करते समय स्वास्थ्य और पर्यावरण का विशेष ध्यान रखा जाए तथा पानी की बचत की जाए। उन्होंने कहा कि व्यापारी वर्ग सदैव अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करता आया है और भविष्य में भी शहर की प्रगति और समृद्धि में अपना योगदान देता रहेगा। श्री बलबीर भसीन ने कहा कि होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि आपसी मनमुटाव दूर कर नए रिश्ते बनाने का अवसर भी है। उन्होंने सभी से प्रेम, सहयोग और सद्भावना के साथ इस पर्व को मनाने की अपील की, ताकि समाज में भाईचारे का वातावरण बना रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023